|| श्री गणेशाय नमः ||

Sanjay Sharma

15/09/1994

12:30 PM

द्वारा निर्मित

DIVINE MESSENGER

THE SOURCE OF LIFE

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

नाम	Sanjay Sharma
लिंग	पुरुष
जन्म दिनांक	15/09/1994
जन्म समय	12:30 PM
जन्म स्थान	
अक्षांश	28 N 36
देशांतर	77 E 06
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	23:46:59

ज्योतिषीय विवरण

लग्न	वृश्चिक
लग्न स्वामी	मंगल
चंद्र राशि	मकर
चंद्र राशि स्वामी	शनि
नक्षत्र	उत्तर आषाढ़
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
चरण	3
तिथि	शुक्ल एकादशी
पाया	चांदी
योग	शोभन
करण	वणिज
वर्ण	वैश्य
तत्त्व	पृथ्वी
वश्य	जलचर
योनी	नकुल
गण	मनुष्य
नाड़ी	अन्त्य
नामाक्षर	भे, भो, जा, जी
सूर्य राशी	सिंह
सूर्य राशी स्वामी	सूर्य
डेकानेट	3
डेकानेट स्वामी	मंगल

सामान्य कुंडली विवरण

अशुभ अंक

राशी	वृश्चिक
महीना	वैशाख
तिथि	4, 9, 14
दिन	मंगलवार
नक्षत्र	रोहिणी
प्रहर	4
लग्न	कुंभ
योग	वैधृ
करण	शकुनि

शुभाशुभ अंक

सौभाग्य अंक	6
शुभांक	4, 5, 6
अशुभ अंक	3, 9
शुभ वर्ष	15, 24, 33, 42, 51
भाग्यशाली दिन	रविवार, सोमवार, मंगलवार
शुभ ग्रह	सूर्य, चंद्र, मंगल
अशुभ ग्रह	बुध, शुक्र
अनुकूल राशी	कर्क, सिंह, मीन
शुभ लग्न	वृषभ, कर्क, कन्या, कुंभ
शुभ रत्न	तांबा
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
शुभ दिशा	दक्षिण

ग्रहों की स्थिति

ग्रह	वक्री	राशी	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	सिंह	28:25:51	सूर्य	उत्तर फल्गुनी	सूर्य	दशवें
चंद्र	--	मकर	04:08:48	शनि	उत्तर आषाढ़	सूर्य	तीसरे
मंगल	--	मिथुन	24:50:49	बुध	पुनर्वसु	बृहस्पति	आठंवें
बुध	--	कन्या	22:15:41	बुध	हस्त	चंद्र	ग्यारहवें
बृहस्पति	--	तुला	18:21:57	शुक्र	स्वाति	राहु	बारहवें
शुक्र	--	तुला	12:13:11	शुक्र	स्वाति	राहु	बारहवें
शनि	हाँ	कुंभ	14:12:12	शनि	शतभिषा	राहु	चौथे
राहु	हाँ	तुला	23:41:06	शुक्र	विशाखा	बृहस्पति	बारहवें
केतु	हाँ	मेष	23:41:06	मंगल	भरणी	शुक्र	छटे
लग्न	--	वृश्चिक	20:35:07	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	पहले

सूर्य
सिंह
उत्तर फल्गुनी
शुभ

चंद्र
मकर
उत्तर आषाढ़
--

मंगल
मिथुन
पुनर्वसु
--

बुध
कन्या
हस्त
अशुभ

बृहस्पति
तुला
स्वाति
--

शुक्र
तुला
स्वाति
बधक

शनि
कुंभ
शतभिषा
सम

राहु
तुला
विशाखा
--

केतु
मेष
भरणी
--

https://divinemessenger.in/

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

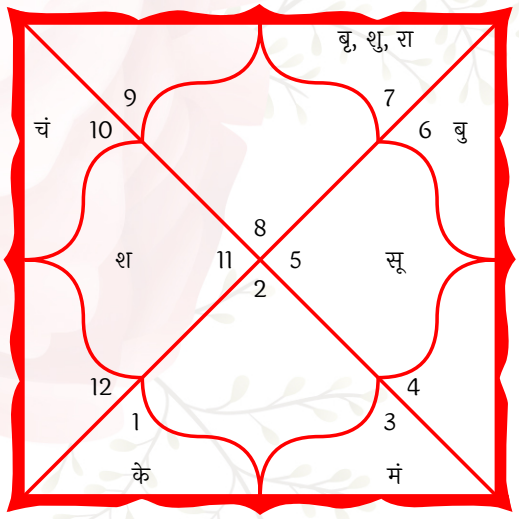

लग्न, जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उगने वाली राशि की डिग्री है। लग्न जन्म या लग्न चार्ट के भीतर सबसे प्रभावशाली और महत्वपूर्ण संकेत है। इस राशि को कुंडली का पहला भाव माना जाएगा और अन्य भावों की गणना राशि चक्र के बाकी राशियों के क्रम में होती है। इस प्रकार, लग्न न केवल आरोही चिन्ह, बल्कि चार्ट के अन्य सभी भावों को भी चित्रित करता है।

चंद्र कुंडली

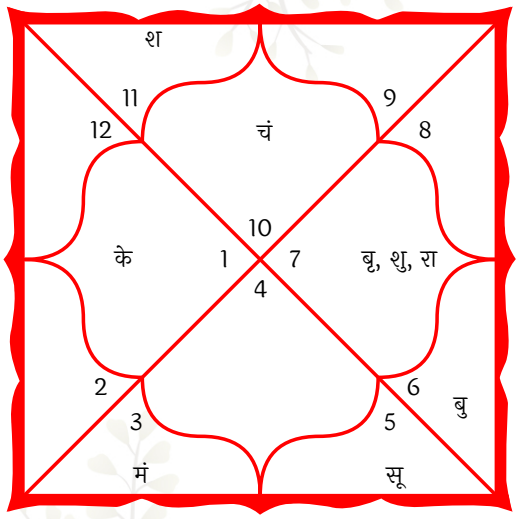

लग्न कुंडली के बाद जिस राशी में चंदर्मा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निमार्ण होता है जो चंद्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

नवमांश कुंडली(D9)

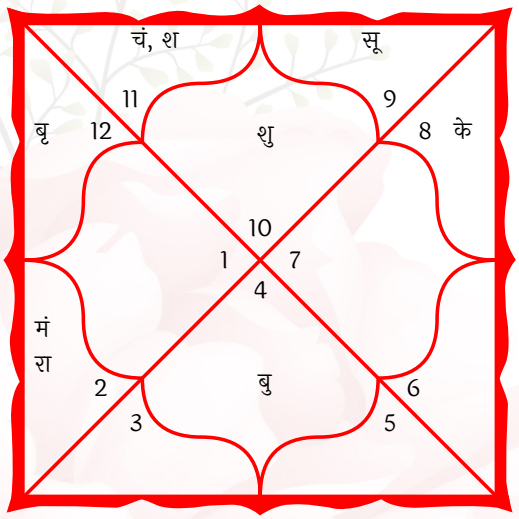

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि गर्ह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वगोर्त्तम की स्थिति उत्पन्न होती है और व्यिक्त शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

भाव संधि

भाव	राशी	भाव मध्य	राशी	भाव संधि
1	वृश्चिक	20:35:07	धनु	07:29:07
2	धनु	24:23:06	मकर	11:17:06
3	मकर	28:11:05	कुंभ	15:05:05
4	मीन	01:59:05	मीन	15:05:05
5	मीन	28:11:05	मेष	11:17:06
6	मेष	24:23:06	वृषभ	07:29:07
7	वृषभ	20:35:07	मिथुन	07:29:07
8	मिथुन	24:23:06	कर्क	11:17:06
9	कर्क	28:11:05	सिंह	15:05:05
10	कन्या	01:59:05	कन्या	15:05:05
11	कन्या	28:11:05	तुला	11:17:06
12	तुला	24:23:06	वृश्चिक	07:29:07

चलित कुंडली

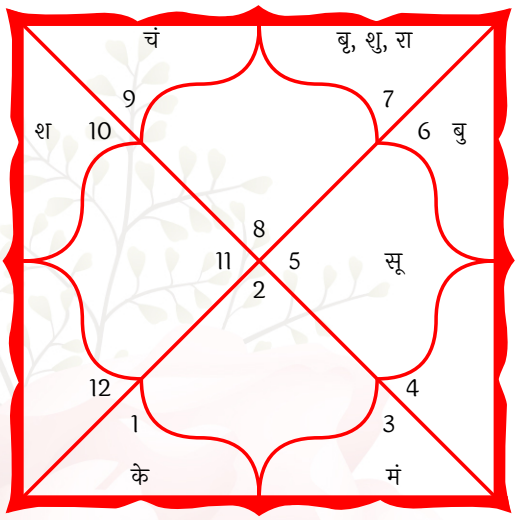

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है की लग्न कुंडली यह दशार्ती है की जन्म के समय क्या लग्न है और सभी गर्ह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है की जन्म के समय किस भाव में कौन सी राशि का पर्भाव है और किस भाव पर कौन सा गर्ह पर्भाव डाल रहा है।

वर्ग कुंडली - I

सूर्य कुंडली

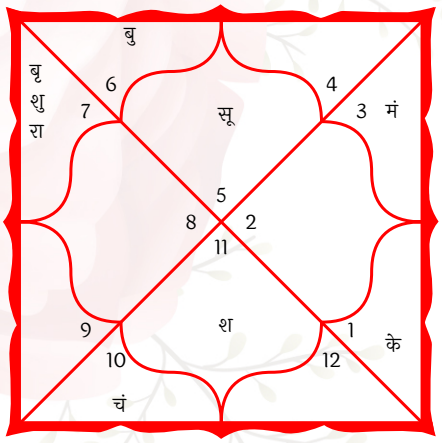

शरीर, स्वास

होरा कुंडली (D2)

वित्त, धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली (D3)

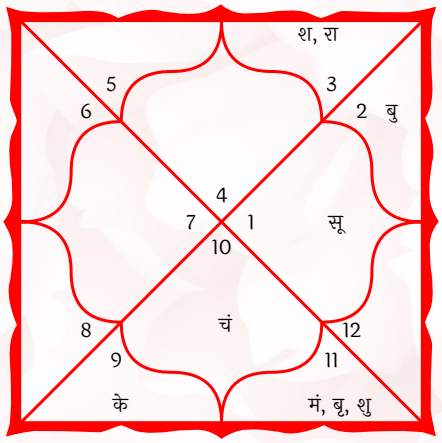

भाई, बहन

चतुर्थांश कुंडली (D4)

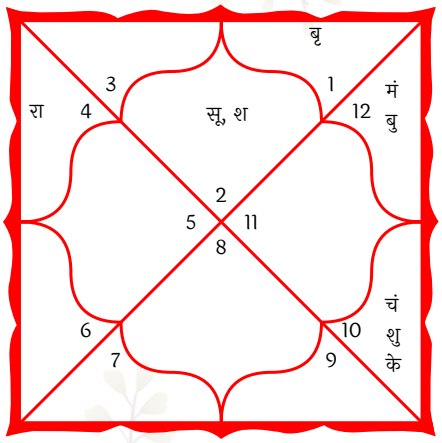

भाग्य

पंचमांश कुंडली (D5)

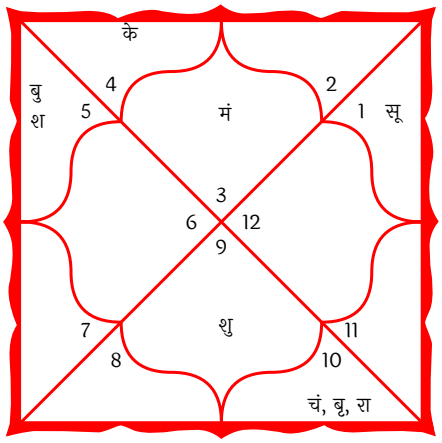

आध्यात्मिकता

षष्ठमांश कुंडली (D6)

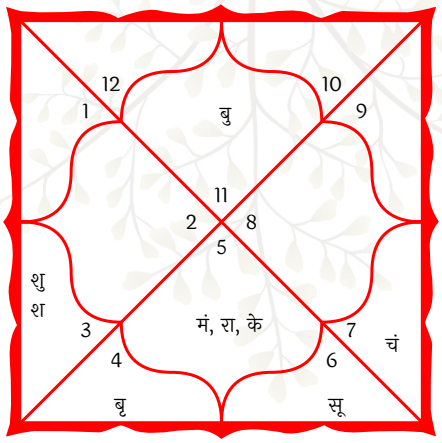

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली (D7)

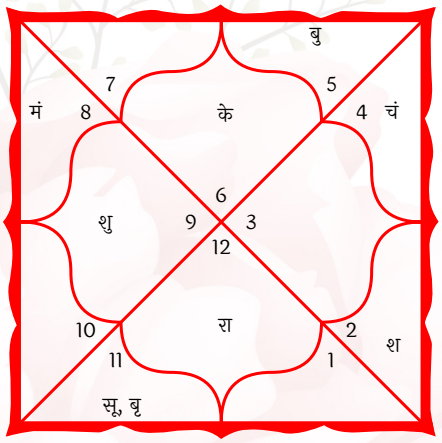

सन्तान

अष्टमांश कुंडली (D8)

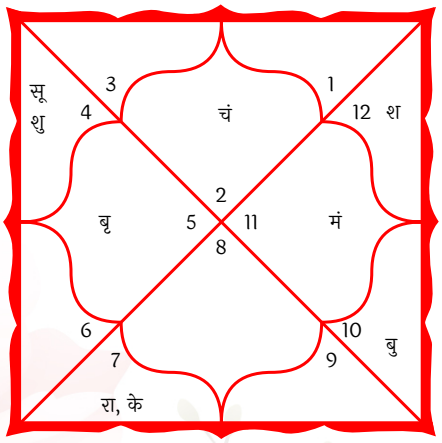

आयु

दशमांश कुंडली (D10)

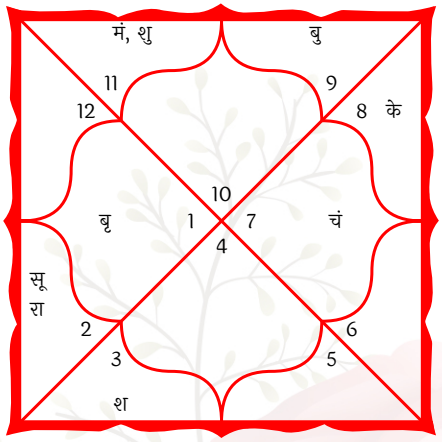

व्यवसाय, जीवनयापन

https://divinemessenger.in/

वर्ग कुंडली - I

द्वादशांश कुंडली (D12)

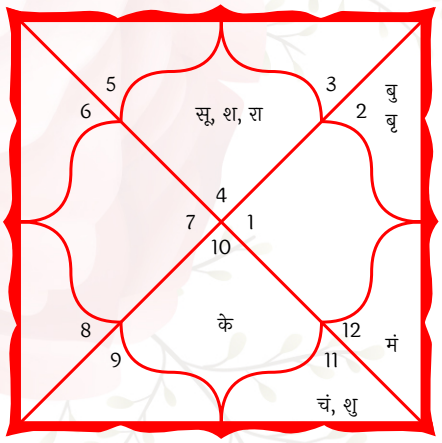

माता-पिता, पैतृक सुख

षोडशांश कुंडली (D16)

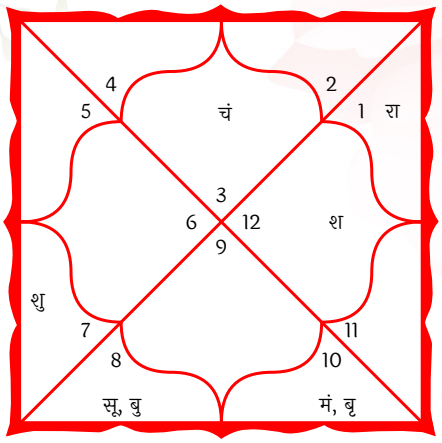

सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली (D20)

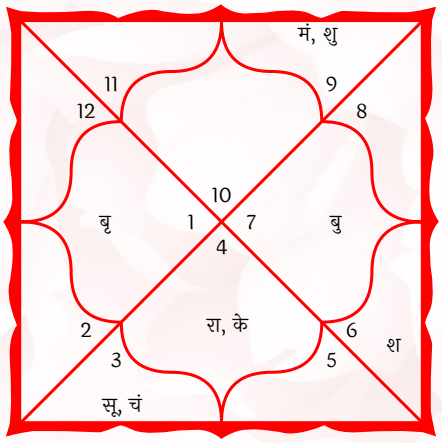

आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विंशांश कुंडली (D24)

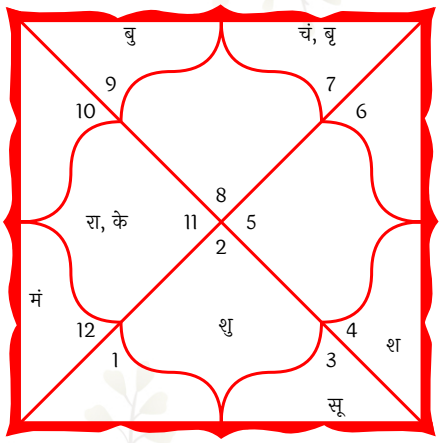

शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली (D27)

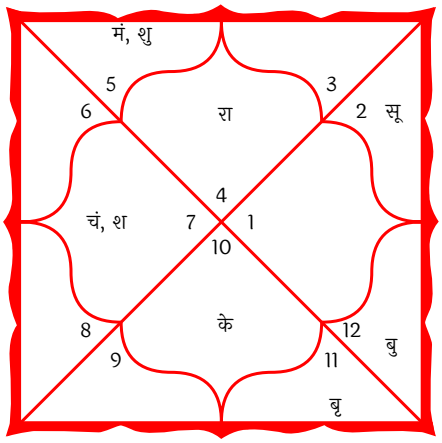

शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली (D30)

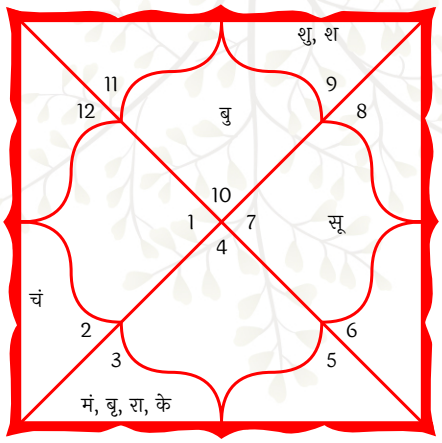

बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली (D40)

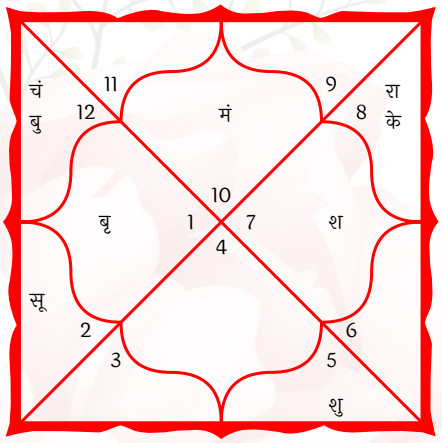

शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली (D45)

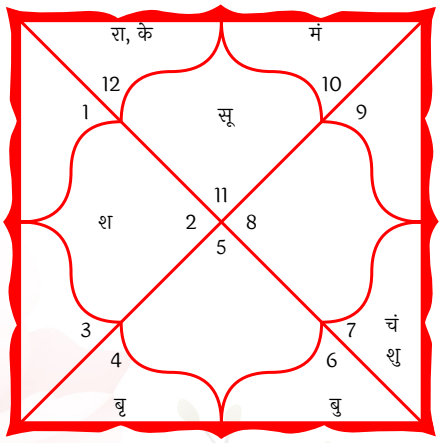

जातक का चरित्र और आचरण

षष्टयांश कुंडली (D60)

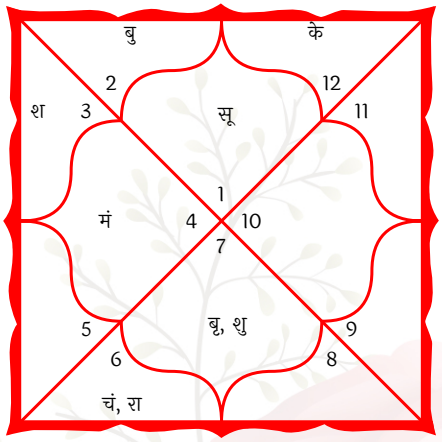

सामान्य खुशियाँ

https://divinemessenger.in/

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
सूर्य	--	मि	मि	स	मि	श	श	श	श
चंद्र	मि	--	स	मि	स	स	स	श	श
मंगल	मि	मि	--	श	मि	स	स	श	मि
बुध	मि	श	स	--	स	मि	स	स	स
बृहस्पति	मि	मि	मि	श	--	श	स	मि	मि
शुक्र	श	श	स	मि	स	--	मि	मि	स
शनि	श	श	श	मि	स	मि	--	मि	श
राहू	श	श	श	स	स	मि	मि	--	श
केतु	श	श	मि	स	स	मि	श	श	--

तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
सूर्य	--	श	मि	मि	मि	मि	श	मि	श
चंद्र	श	--	श	श	मि	मि	मि	मि	मि
मंगल	मि	श	--	मि	श	श	श	श	मि
बुध	मि	श	मि	--	मि	मि	श	मि	श
बृहस्पति	मि	मि	श	मि	--	श	श	श	श
शुक्र	मि	मि	श	मि	श	--	श	श	श
शनि	श	मि	श	श	श	श	--	श	मि
राहू	मि	मि	श	मि	श	श	श	--	श
केतु	श	मि	मि	श	श	श	मि	श	--

https://divinemessenger.in/

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
सूर्य	--	स	प.मि	मि	प.मि	स	प.श	स	प.श
चंद्र	स	--	श	स	मि	मि	मि	स	स
मंगल	प.मि	स	--	स	स	श	श	प.श	प.मि
बुध	प.मि	प.श	मि	--	मि	प.मि	श	मि	श
बृहस्पति	प.मि	प.मि	स	स	--	प.श	श	स	स
शुक्र	स	स	श	प.मि	श	--	स	स	श
शनि	प.श	स	प.श	स	श	स	--	स	स
राहू	स	स	प.श	मि	श	स	स	--	प.श
केतु	प.श	स	प.मि	श	श	स	स	प.श	--

संक्षिप्त रूप:-

- मि : मित्र
- स : सम
- श : शत्रु
- प.मि : परम मित्र
- प.श : परम शत्रु

https://divinemessenger.in/

कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	राशी	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	सिंह	28:31:38	सूर्य	10
चंद्र	--	मकर	04:14:36	शनि	3
मंगल	--	मिथुन	24:56:37	बुध	8
बुध	--	कन्या	22:21:29	बुध	11
बृहस्पति	--	तुला	18:27:45	शुक्र	12
शुक्र	--	तुला	12:18:59	शुक्र	12
शनि	हाँ	कुंभ	14:17:60	शनि	4
राहु	हाँ	तुला	23:46:54	शुक्र	12
केतु	हाँ	मेष	23:46:54	मंगल	6
लग्न	--	वृश्चिक	20:40:55	मंगल	1

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
सूर्य	उत्तर फल्गुनी	सूर्य	मंगल	राहु
चंद्र	उत्तर आषाढ़	सूर्य	शनि	चंद्र
मंगल	पुनर्वसु	बृहस्पति	बुध	राहु
बुध	हस्त	चंद्र	शुक्र	बुध
बृहस्पति	स्वाति	राहु	चंद्र	बृहस्पति
शुक्र	स्वाति	राहु	शनि	बृहस्पति
शनि	शतभिषा	राहु	बुध	शनि
राहु	विशाखा	बृहस्पति	शनि	बृहस्पति
केतु	भरणी	शुक्र	शनि	बृहस्पति
लग्न	ज्येष्ठा	बुध	शुक्र	बृहस्पति

कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	राशी	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	वृश्चिक	20:40:55	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	शुक्र	बृहस्पति
2	धनु	22:22:27	बृहस्पति	पूर्व आषाढ़	शुक्र	शनि	बुध
3	मकर	27:20:23	शनि	धनिष्ठा	मंगल	बृहस्पति	सूर्य
4	मीन	02:04:52	बृहस्पति	पूर्व भाद्रपद	बृहस्पति	राहु	शनि
5	मेष	02:28:15	मंगल	अश्विनि	केतु	शुक्र	शनि
6	मेष	27:58:15	मंगल	कृत्तिका	सूर्य	चंद्र	शनि
7	वृषभ	20:40:55	शुक्र	रोहिणी	चंद्र	शुक्र	शुक्र
8	मिथुन	22:22:27	बुध	पुनर्वसु	बृहस्पति	शनि	बुध
9	कर्क	27:20:23	चंद्र	अश्लेषा	बुध	बृहस्पति	सूर्य
10	कन्या	02:04:52	बुध	उत्तर फल्गुनी	सूर्य	बृहस्पति	केतु
11	तुला	02:28:15	शुक्र	चित्रा	मंगल	केतु	शनि
12	तुला	27:58:15	शुक्र	विशाखा	बृहस्पति	शुक्र	बृहस्पति

कुंडली

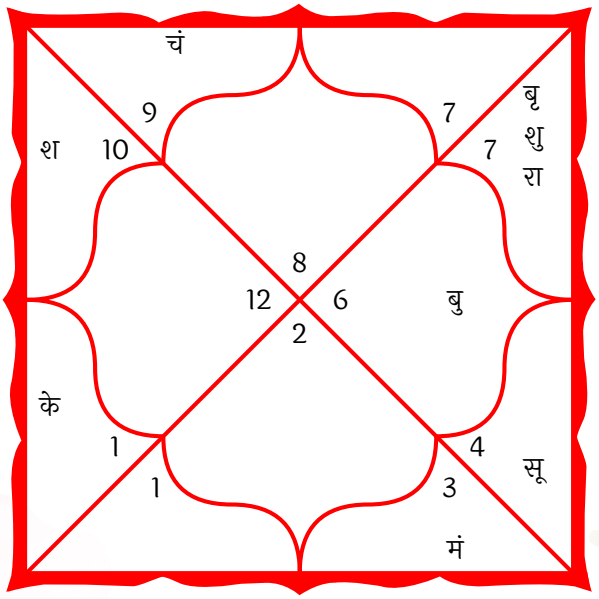

https://divinemessenger.in/

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	0	0	1	0	1	4
वृषभ	1	0	0	1	0	0	1	0	3
मिथुन	1	1	1	1	1	0	0	0	5
कर्क	0	0	1	1	0	0	0	0	2
सिंह	1	0	0	1	1	0	1	1	5
कन्या	1	0	1	0	0	1	1	1	5
तुला	0	1	0	0	0	0	1	1	3
वृश्चिक	1	1	0	1	0	0	1	0	4
धनु	0	0	1	0	0	0	1	0	2
मकर	0	0	1	1	0	0	0	1	3
कुंभ	1	0	1	1	1	0	1	1	6
मीन	1	1	1	0	1	1	1	0	6

अभिप्राय

पिता

व्यक्तिगत प्रभाव

राजकीय कृपा

सूचक

शुभ

अशुभ

मिश्रित

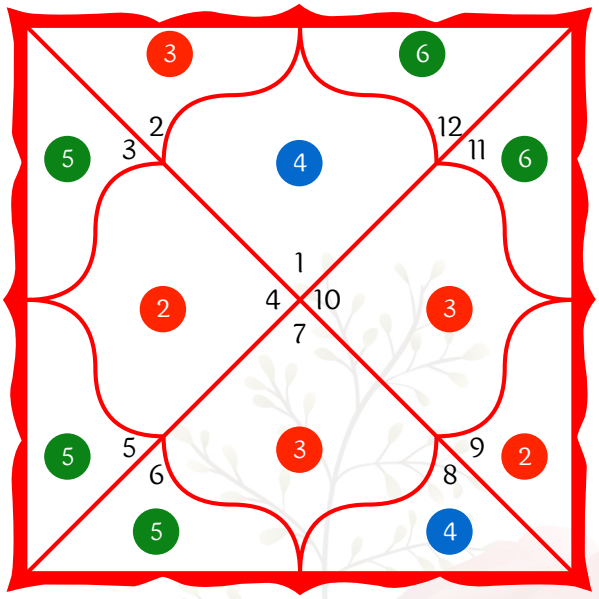

https://divinemessenger.in/

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	1	1	1	1	1	6
वृषभ	1	0	0	0	1	0	0	0	2
मिथुन	1	1	0	1	0	1	1	0	5
कर्क	0	1	1	1	1	1	1	0	6
सिंह	0	0	1	0	1	1	0	1	4
कन्या	0	0	0	1	1	0	0	1	3
तुला	1	1	1	0	1	0	0	0	4
वृश्चिक	0	1	1	1	0	0	0	0	3
धनु	0	0	0	1	0	1	1	0	3
मकर	1	1	0	1	1	1	0	1	6
कुंभ	1	0	1	0	0	1	0	0	3
मीन	1	1	1	1	0	0	0	0	4

अभिप्राय

माता | मन | भावना | बुद्धि

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

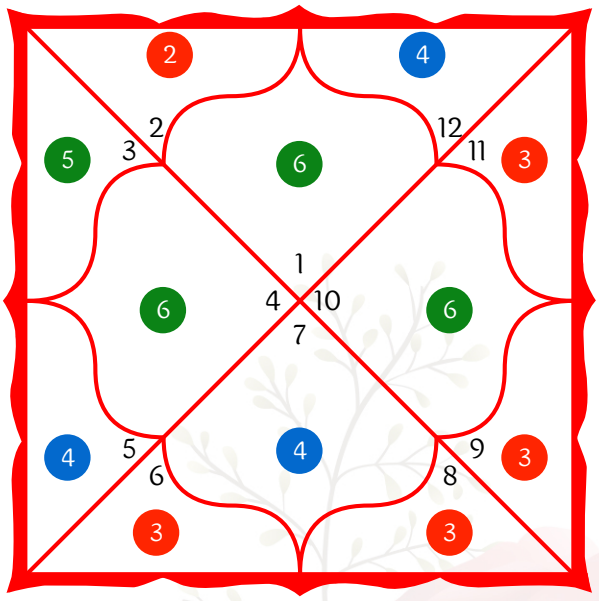

https://divinemessenger.in/

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	0	0	0	0	1	2
वृषभ	1	0	0	0	0	1	1	0	3
मिथुन	1	1	1	0	0	0	0	0	3
कर्क	0	0	1	1	1	0	0	0	3
सिंह	0	0	0	0	1	1	1	1	4
कन्या	0	0	1	0	1	1	1	1	5
तुला	1	0	0	0	0	0	1	0	2
वृश्चिक	0	1	0	1	0	0	1	1	4
धनु	1	0	1	0	0	0	1	0	3
मकर	1	0	1	1	0	0	0	1	4
कुंभ	0	0	0	1	0	0	1	0	2
मीन	0	1	1	0	1	1	0	0	4

अभिप्राय

भाई-बहन | भूमि संपत्ति | दुर्घटना | विवाद

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

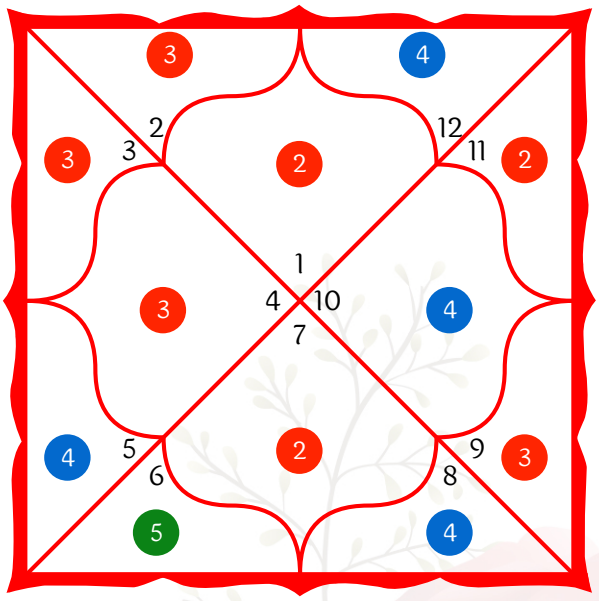

https://divinemessenger.in/

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	1	0	0	0	0	1	4
वृषभ	0	0	0	1	1	1	1	0	4
मिथुन	1	1	1	1	0	1	0	1	6
कर्क	1	0	1	1	0	0	0	0	3
सिंह	0	1	0	1	1	1	1	1	6
कन्या	0	0	1	1	1	0	1	1	5
तुला	0	1	0	0	0	1	1	0	3
वृश्चिक	0	1	0	1	0	1	1	1	5
धनु	1	0	1	0	0	1	1	1	5
मकर	1	0	1	1	0	1	0	0	4
कुंभ	0	1	1	1	0	1	1	1	6
मीन	0	0	1	0	1	0	1	0	3

अभिप्राय

रिश्तेदार | विवेक बुद्धि | शिक्षा | वक्ता

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

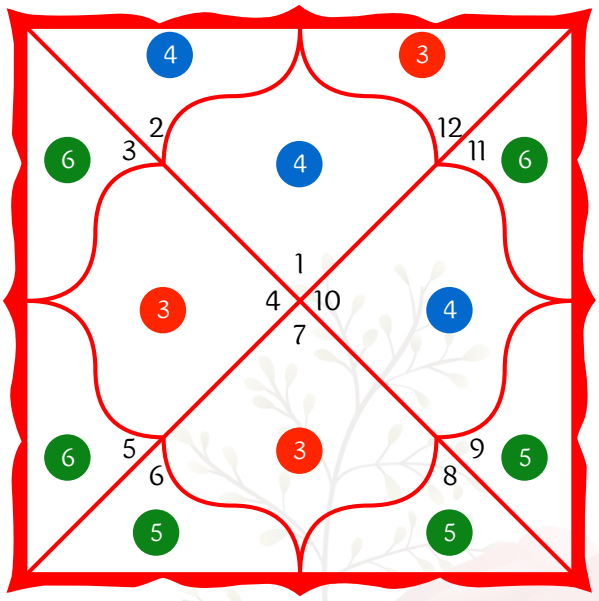

https://divinemessenger.in/

बृहस्पति भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	0	1	0	1	1	5
वृषभ	1	1	0	1	1	0	0	1	5
मिथुन	1	0	1	1	0	1	1	0	5
कर्क	0	1	1	1	1	1	1	1	7
सिंह	1	0	0	0	1	1	0	1	4
कन्या	1	1	1	1	0	0	0	1	5
तुला	1	0	0	1	1	0	0	0	3
वृश्चिक	1	1	0	0	1	1	0	1	5
धनु	0	0	1	1	1	0	0	1	4
मकर	0	0	1	1	1	0	1	0	4
कुंभ	1	1	0	1	0	1	0	1	5
मीन	1	0	1	0	0	1	0	1	4

अभिप्राय

संतान | सम्मान | धार्मिक कर्म | सीखना | भाग्य

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

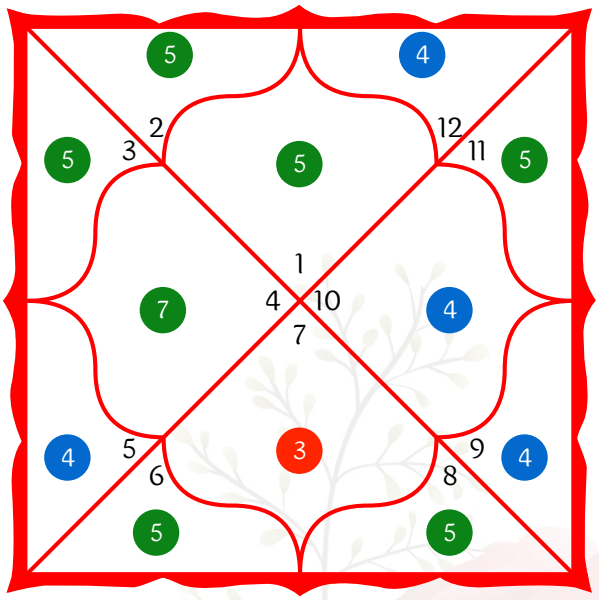

https://divinemessenger.in/

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	1	1	0	0	0	1	0	3
वृषभ	0	1	1	1	1	1	1	0	6
मिथुन	1	0	0	0	1	1	1	1	5
कर्क	1	0	0	1	1	1	0	1	5
सिंह	0	1	1	0	1	1	0	0	4
कन्या	0	1	0	0	0	0	1	1	3
तुला	0	0	1	0	0	1	1	0	3
वृश्चिक	0	1	1	1	0	1	1	1	6
धनु	0	1	0	0	0	1	1	1	4
मकर	0	1	0	1	0	1	0	1	4
कुंभ	0	1	1	1	1	1	0	1	6
मीन	1	1	0	0	0	0	0	1	3

अभिप्राय

पति या पत्नी | विवाह | वाहन | आभूषण

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

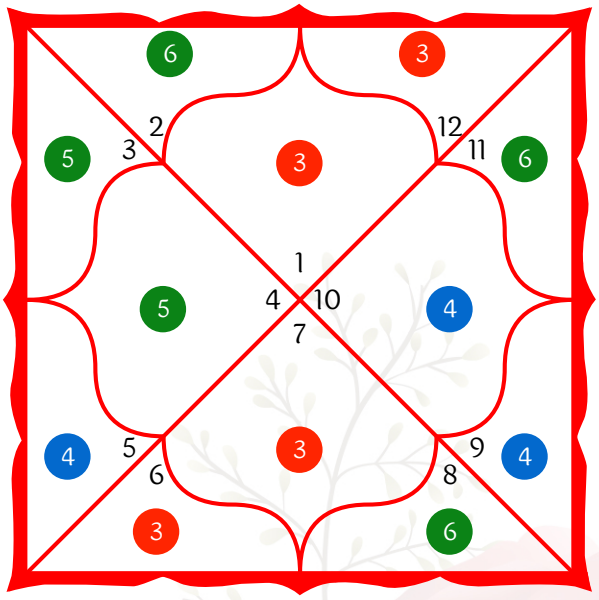

https://divinemessenger.in/

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	1	0	0	1	1	4
वृषभ	1	0	1	1	0	0	0	0	3
मिथुन	1	1	0	1	0	0	1	0	4
कर्क	0	0	0	1	0	0	1	0	2
सिंह	1	0	1	1	1	1	0	1	6
कन्या	1	0	0	0	1	1	0	1	4
तुला	0	0	1	0	0	0	0	0	1
वृश्चिक	1	1	1	0	0	0	0	1	4
धनु	0	0	0	0	0	0	1	0	1
मकर	0	0	0	0	0	0	0	1	1
कुंभ	1	0	0	1	1	0	0	1	4
मीन	1	1	1	0	1	1	0	0	5

अभिप्राय

कर्मचारी | जीविका | कष्ट व शोक

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

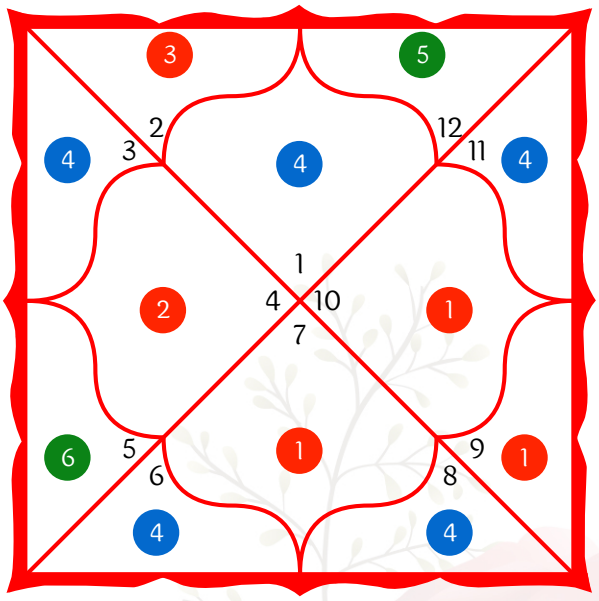

https://divinemessenger.in/

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	0	0	1	1	1	0	1	1	5
वृषभ	1	0	0	0	0	1	1	0	3
मिथुन	1	1	1	1	1	1	0	0	6
कर्क	1	0	0	1	1	0	1	0	4
सिंह	0	0	1	0	1	1	0	1	4
कन्या	0	0	0	1	0	0	0	1	2
तुला	1	1	0	1	1	1	0	0	5
वृश्चिक	1	1	1	0	1	1	1	0	6
धनु	0	0	0	1	0	1	1	0	3
मकर	1	0	0	0	1	1	0	1	4
कुंभ	0	0	0	1	1	1	1	0	4
मीन	0	1	1	0	1	0	0	0	3

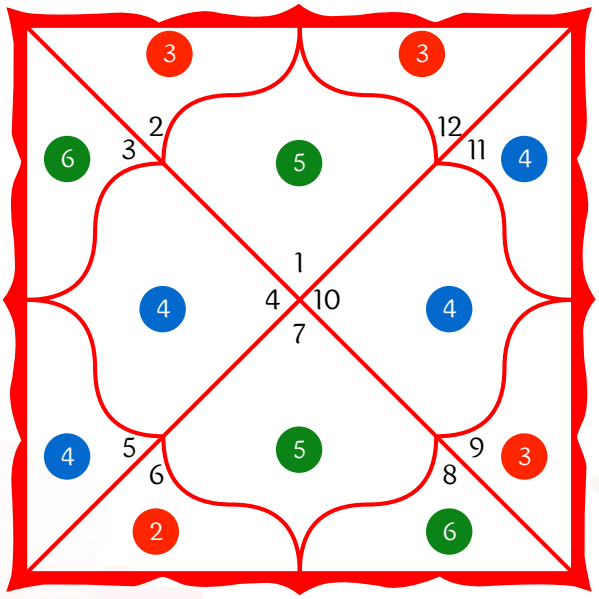

सूचक

शुभ अशुभ मिश्रित

https://divinemessenger.in/

सर्वाष्टक वग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	4	6	2	4	5	3	4	0	28
वृषभ	3	2	3	4	5	6	3	0	26
मिथुन	5	5	3	6	5	5	4	0	33
कर्क	2	6	3	3	7	5	2	0	28
सिंह	5	4	4	6	4	4	6	0	33
कन्या	5	3	5	5	5	3	4	0	30
तुला	3	4	2	3	3	3	1	0	19
वृश्चिक	4	3	4	5	5	6	4	0	31
धनु	2	3	3	5	4	4	1	0	22
मकर	3	6	4	4	4	4	1	0	26
कुंभ	6	3	2	6	5	6	4	0	32
मीन	6	4	4	3	4	3	5	0	29

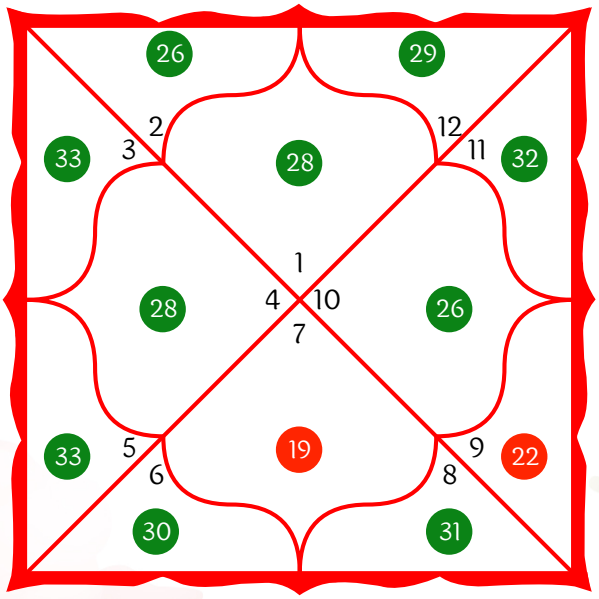

सूचक

शुभ अशुभ मिश्रित

https://divinemessenger.in/

विम्शोत्तरी दशा - I

महादशा -> अंतर्दशा - I

सूर्य

03-05-1991 18:18
03-05-1997 18:18

सूर्य	21-08-1991 18:17
चंद्र	21-02-1992 18:17
मंगल	27-06-1992 18:16
राहू	21-05-1993 18:16
बृहस्पति	11-03-1994 18:16
शनि	23-02-1995 18:15
बुध	29-12-1995 18:14
केतु	05-05-1996 18:13
शुक्र	03-05-1997 18:18

चंद्र

03-05-1997 18:18
03-05-2007 18:18

चंद्र	03-03-1998 18:18
मंगल	03-10-1998 18:18
राहू	03-04-2000 18:18
बृहस्पति	02-08-2001 18:17
शनि	04-03-2003 18:16
बुध	04-08-2004 18:16
केतु	04-03-2005 18:16
शुक्र	04-11-2006 18:16
सूर्य	03-05-2007 18:18

मंगल

03-05-2007 18:18
03-05-2014 18:18

मंगल	30-09-2007 18:18
राहू	18-10-2008 18:18
बृहस्पति	24-09-2009 18:17
शनि	02-11-2010 18:17
बुध	29-10-2011 18:17
केतु	27-03-2012 18:17
शुक्र	27-05-2013 18:17
सूर्य	03-10-2013 18:16
चंद्र	03-05-2014 18:18

राहू

03-05-2014 18:18
03-05-2032 18:18

राहू	15-01-2017 18:18
बृहस्पति	08-06-2019 18:17
शनि	14-04-2022 18:17
बुध	01-11-2024 18:16
केतु	19-11-2025 18:16
शुक्र	19-11-2028 18:16
सूर्य	13-10-2029 18:16
चंद्र	13-04-2031 18:16
मंगल	03-05-2032 18:18

बृहस्पति

03-05-2032 18:18
03-05-2048 18:18

बृहस्पति	21-06-2034 18:17
शनि	02-01-2037 18:16
बुध	08-04-2039 18:15
केतु	14-03-2040 18:14
शुक्र	13-11-2042 18:13
सूर्य	31-08-2043 18:13
चंद्र	31-12-2044 18:12
मंगल	07-12-2045 18:11
राहू	03-05-2048 18:18

शनि

03-05-2048 18:18
03-05-2067 18:18

शनि	06-05-2051 18:17
बुध	15-01-2054 18:17
केतु	24-02-2055 18:17
शुक्र	23-04-2058 18:16
सूर्य	04-04-2059 18:15
चंद्र	03-11-2060 18:14
मंगल	12-12-2061 18:14
राहू	18-10-2064 18:14
बृहस्पति	03-05-2067 18:18

https://divinemessenger.in/

विम्शोत्तरी दशा - II

महादशा -> अंतर्दशा - II

बुध

03-05-2067 18:18
03-05-2084 18:18

बुध	30-09-2069 18:17
केतु	26-09-2070 18:17
शुक्र	26-07-2073 18:17
सूर्य	01-06-2074 18:16
चंद्र	01-11-2075 18:16
मंगल	28-10-2076 18:16
राहू	16-05-2079 18:15
बृहस्पति	22-08-2081 18:14
शनि	03-05-2084 18:18

केतु

03-05-2084 18:18
03-05-2091 18:18

केतु	30-09-2084 18:18
शुक्र	30-11-2085 18:18
सूर्य	05-04-2086 18:17
चंद्र	05-11-2086 18:17
मंगल	01-04-2087 18:17
राहू	19-04-2088 18:17
बृहस्पति	25-03-2089 18:16
शनि	04-05-2090 18:16
बुध	03-05-2091 18:18

शुक्र

03-05-2091 18:18
03-05-2111 18:18

शुक्र	03-09-2094 18:18
सूर्य	03-09-2095 18:18
चंद्र	03-05-2097 18:18
मंगल	03-07-2098 18:18
राहू	03-07-2101 18:18
बृहस्पति	04-03-2104 18:17
शनि	04-05-2107 18:16
बुध	04-03-2110 18:16
केतु	03-05-2111 18:18

https://divinemessenger.in/

विम्शोत्तरी दशा - III

अंतर्दशा -> प्रत्यंतर दशा - I

राहू

03-05-2014 18:18
15-01-2017 18:18

राहू	29-09-2014 13:30
बृहस्पति	08-02-2015 03:54
शनि	12-07-2015 01:29
बुध	29-11-2015 18:16
केतु	25-01-2016 11:04
शुक्र	07-07-2016 11:04
सूर्य	26-08-2016 01:28
चंद्र	16-11-2016 01:28
मंगल	15-01-2017 18:18

बृहस्पति

15-01-2017 18:18
08-06-2019 18:18

बृहस्पति	10-05-2017 23:05
शनि	27-09-2017 18:17
बुध	30-01-2018 03:53
केतु	22-03-2018 13:29
शुक्र	15-08-2018 13:29
सूर्य	28-09-2018 18:16
चंद्र	10-12-2018 18:16
मंगल	31-01-2019 03:52
राहू	08-06-2019 18:18

शनि

08-06-2019 18:18
14-04-2022 18:18

शनि	21-11-2019 05:06
बुध	15-04-2020 13:29
केतु	14-06-2020 09:53
शुक्र	05-12-2020 09:52
सूर्य	26-01-2021 17:03
चंद्र	21-04-2021 05:02
मंगल	20-06-2021 01:26
राहू	23-11-2021 23:01
बृहस्पति	14-04-2022 18:18

बुध

14-04-2022 18:18
01-11-2024 18:18

बुध	24-08-2022 19:29
केतु	18-10-2022 08:40
शुक्र	21-03-2023 08:39
सूर्य	07-05-2023 06:15
चंद्र	23-07-2023 18:14
मंगल	16-09-2023 07:25
राहू	03-02-2024 00:12
बृहस्पति	05-06-2024 09:48
शनि	01-11-2024 18:18

केतु

01-11-2024 18:18
19-11-2025 18:18

केतु	23-11-2024 19:30
शुक्र	26-01-2025 19:29
सूर्य	14-02-2025 17:04
चंद्र	16-03-2025 05:03
मंगल	07-04-2025 06:15
राहू	02-06-2025 23:03
बृहस्पति	23-07-2025 08:39
शनि	22-09-2025 05:03
बुध	19-11-2025 18:18

शुक्र

19-11-2025 18:18
19-11-2028 18:18

शुक्र	19-05-2026 18:18
सूर्य	13-07-2026 18:17
चंद्र	13-10-2026 18:17
मंगल	16-12-2026 18:16
राहू	28-05-2027 18:16
बृहस्पति	22-10-2027 18:16
शनि	12-04-2028 18:15
बुध	15-09-2028 18:14
केतु	19-11-2028 18:18

https://divinemessenger.in/

विम्शोत्तरी दशा - IV

अंतर्दशा -> प्रत्यंतर दशा - II

सूर्य

19-11-2028 18:18
13-10-2029 18:18

सूर्य	05-12-2028 23:06
चंद्र	01-01-2029 23:05
मंगल	20-01-2029 20:40
राहू	11-03-2029 11:04
बृहस्पति	24-04-2029 15:51
शनि	14-06-2029 23:02
बुध	30-07-2029 20:38
केतु	18-08-2029 18:13
शुक्र	13-10-2029 18:18

चंद्र

13-10-2029 18:18
13-04-2031 18:18

चंद्र	28-11-2029 18:18
मंगल	30-12-2029 06:17
राहू	23-03-2030 06:17
बृहस्पति	04-06-2030 06:17
शनि	29-08-2030 18:16
बुध	15-11-2030 06:15
केतु	16-12-2030 18:14
शुक्र	16-03-2031 18:14
सूर्य	13-04-2031 18:18

मंगल

13-04-2031 18:18
03-05-2032 18:18

मंगल	05-05-2031 19:30
राहू	02-07-2031 12:18
बृहस्पति	22-08-2031 21:54
शनि	22-10-2031 18:18
बुध	16-12-2031 07:29
केतु	07-01-2032 08:41
शुक्र	10-03-2032 08:40
सूर्य	29-03-2032 06:15
चंद्र	03-05-2032 18:18

वर्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	समाप्ति तिथि
महादशा	राहु	03-05-2014 18:18	03-05-2032 18:18
अंतर्दशा	शनि	08-06-2019 18:18	14-04-2022 18:18
प्रत्यंतर दशा	बृहस्पति	23-11-2021 23:06	14-04-2022 18:18
सूक्ष्म दशा	बुध	02-01-2022 20:42	22-01-2022 05:49
प्राण दशा	बुध	02-01-2022 20:42	05-01-2022 14:35

*ध्यान दे - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते है।

योगिनी दशा - I

संकटा (8 वर्ष)

19-03-1990 20:14
19-03-1998 20:14

संकटा	29-12-1991 20:13
मंगला	20-03-1992 20:12
पिंगला	30-08-1992 20:11
धान्य	30-04-1993 20:11
भ्रामरी	22-03-1994 20:10
भद्रिका	02-05-1995 20:10
उल्का	01-09-1996 20:09
सिद्धि	19-03-1998 20:14

मंगला (1 वर्ष)

19-03-1998 20:14
19-03-1999 20:14

मंगला	29-03-1998 20:14
पिंगला	18-04-1998 20:14
धान्य	18-05-1998 20:14
भ्रामरी	28-06-1998 20:13
भद्रिका	17-08-1998 20:13
उल्का	17-10-1998 20:13
सिद्धि	27-12-1998 20:13
संकटा	19-03-1999 20:14

पिंगला (2 वर्ष)

19-03-1999 20:14
19-03-2001 20:14

पिंगला	29-04-1999 20:13
धान्य	29-06-1999 20:13
भ्रामरी	18-09-1999 20:12
भद्रिका	28-12-1999 20:12
उल्का	28-04-2000 20:12
सिद्धि	17-09-2000 20:12
संकटा	27-02-2001 20:11
मंगला	19-03-2001 20:14

धान्य (3 वर्ष)

19-03-2001 20:14
19-03-2004 20:14

धान्य	19-06-2001 20:14
भ्रामरी	19-10-2001 20:14
भद्रिका	19-03-2002 20:14
उल्का	19-09-2002 20:14
सिद्धि	19-04-2003 20:14
संकटा	19-12-2003 20:14
मंगला	19-01-2004 20:14
पिंगला	19-03-2004 20:14

भ्रामरी (4 वर्ष)

19-03-2004 20:14
19-03-2008 20:14

भ्रामरी	29-08-2004 20:13
भद्रिका	21-03-2005 20:13
उल्का	21-11-2005 20:13
सिद्धि	31-08-2006 20:13
संकटा	21-07-2007 20:12
मंगला	31-08-2007 20:11
पिंगला	20-11-2007 20:10
धान्य	19-03-2008 20:14

भद्रिका (5 वर्ष)

19-03-2008 20:14
19-03-2013 20:14

भद्रिका	29-11-2008 20:13
उल्का	29-09-2009 20:13
सिद्धि	18-09-2010 20:12
संकटा	28-10-2011 20:12
मंगला	18-12-2011 20:12
पिंगला	28-03-2012 20:12
धान्य	28-08-2012 20:12
भ्रामरी	19-03-2013 20:14

https://divinemessenger.in/

योगिनी दशा - II

उल्का (6 वर्ष)

19-03-2013 20:14
19-03-2019 20:14

उल्का	19-03-2014 20:14
सिद्धि	19-05-2015 20:14
संकटा	18-09-2016 20:13
मंगला	18-11-2016 20:13
पिंगला	18-03-2017 20:13
धान्य	18-09-2017 20:13
भ्रामरी	18-05-2018 20:13
भद्रिका	19-03-2019 20:14

सिद्धि (7 वर्ष)

19-03-2019 20:14
19-03-2026 20:14

सिद्धि	29-07-2020 20:14
संकटा	18-02-2022 20:14
मंगला	28-04-2022 20:14
पिंगला	17-09-2022 20:14
धान्य	17-04-2023 20:14
भ्रामरी	27-01-2024 20:14
भद्रिका	16-01-2025 20:13
उल्का	19-03-2026 20:14

संकटा (8 वर्ष)

19-03-2026 20:14
19-03-2034 20:14

संकटा	29-12-2027 20:13
मंगला	20-03-2028 20:12
पिंगला	30-08-2028 20:11
धान्य	30-04-2029 20:11
भ्रामरी	22-03-2030 20:10
भद्रिका	02-05-2031 20:10
उल्का	01-09-2032 20:09
सिद्धि	19-03-2034 20:14

मंगला (1 वर्ष)

19-03-2034 20:14
19-03-2035 20:14

मंगला	29-03-2034 20:14
पिंगला	18-04-2034 20:14
धान्य	18-05-2034 20:14
भ्रामरी	28-06-2034 20:13
भद्रिका	17-08-2034 20:13
उल्का	17-10-2034 20:13
सिद्धि	27-12-2034 20:13
संकटा	19-03-2035 20:14

पिंगला (2 वर्ष)

19-03-2035 20:14
19-03-2037 20:14

पिंगला	29-04-2035 20:13
धान्य	29-06-2035 20:13
भ्रामरी	18-09-2035 20:12
भद्रिका	28-12-2035 20:12
उल्का	28-04-2036 20:12
सिद्धि	17-09-2036 20:12
संकटा	27-02-2037 20:11
मंगला	19-03-2037 20:14

धान्य (3 वर्ष)

19-03-2037 20:14
19-03-2040 20:14

धान्य	19-06-2037 20:14
भ्रामरी	19-10-2037 20:14
भद्रिका	19-03-2038 20:14
उल्का	19-09-2038 20:14
सिद्धि	19-04-2039 20:14
संकटा	19-12-2039 20:14
मंगला	19-01-2040 20:14
पिंगला	19-03-2040 20:14

योगिनी दशा - III

भ्रामरी (4 वर्ष)

19-03-2040 20:14
19-03-2044 20:14

भ्रामरी	29-08-2040 20:13
भद्रिका	21-03-2041 20:13
उल्का	21-11-2041 20:13
सिद्धि	31-08-2042 20:13
संकटा	21-07-2043 20:12
मंगला	31-08-2043 20:11
पिंगला	20-11-2043 20:10
धान्य	19-03-2044 20:14

भद्रिका (5 वर्ष)

19-03-2044 20:14
19-03-2049 20:14

भद्रिका	29-11-2044 20:13
उल्का	29-09-2045 20:13
सिद्धि	18-09-2046 20:12
संकटा	28-10-2047 20:12
मंगला	18-12-2047 20:12
पिंगला	28-03-2048 20:12
धान्य	28-08-2048 20:12
भ्रामरी	19-03-2049 20:14

उल्का (6 वर्ष)

19-03-2049 20:14
19-03-2055 20:14

उल्का	19-03-2050 20:14
सिद्धि	19-05-2051 20:14
संकटा	18-09-2052 20:13
मंगला	18-11-2052 20:13
पिंगला	18-03-2053 20:13
धान्य	18-09-2053 20:13
भ्रामरी	18-05-2054 20:13
भद्रिका	19-03-2055 20:14

सिद्धि (7 वर्ष)

19-03-2055 20:14
19-03-2062 20:14

सिद्धि	29-07-2056 20:14
संकटा	18-02-2058 20:14
मंगला	28-04-2058 20:14
पिंगला	17-09-2058 20:14
धान्य	17-04-2059 20:14
भ्रामरी	27-01-2060 20:14
भद्रिका	16-01-2061 20:13
उल्का	19-03-2062 20:14

संकटा (8 वर्ष)

19-03-2062 20:14
19-03-2070 20:14

संकटा	29-12-2063 20:13
मंगला	20-03-2064 20:12
पिंगला	30-08-2064 20:11
धान्य	30-04-2065 20:11
भ्रामरी	22-03-2066 20:10
भद्रिका	02-05-2067 20:10
उल्का	01-09-2068 20:09
सिद्धि	19-03-2070 20:14

मंगला (1 वर्ष)

19-03-2070 20:14
19-03-2071 20:14

मंगला	29-03-2070 20:14
पिंगला	18-04-2070 20:14
धान्य	18-05-2070 20:14
भ्रामरी	28-06-2070 20:13
भद्रिका	17-08-2070 20:13
उल्का	17-10-2070 20:13
सिद्धि	27-12-2070 20:13
संकटा	19-03-2071 20:14

*ध्यान दे – सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते है।

https://divinemessenger.in/

चर दशा - I

वृश्चिक (7 वर्ष)

15-09-1994 12:30
15-09-2001 12:30

धनु	13-04-1995 12:30
मकर	11-11-1995 12:30
कुम्भ	09-06-1996 12:30
मीन	07-01-1997 12:30
मेष	05-08-1997 12:30
वृष	06-03-1998 12:30
मिथुन	05-10-1998 12:30
कर्क	04-05-1999 12:30
सिंह	03-12-1999 12:30
कन्या	02-07-2000 12:30
तुला	31-01-2001 12:30
वृश्चिक	15-09-2001 12:30

धनु (12 वर्ष)

15-09-2001 12:30
15-09-2013 12:30

वृश्चिक	10-09-2002 12:30
तुला	05-09-2003 12:30
कन्या	31-08-2004 12:30
सिंह	26-08-2005 12:30
कर्क	21-08-2006 12:30
मिथुन	16-08-2007 12:30
वृष	11-08-2008 12:30
मेष	06-08-2009 12:30
मीन	01-08-2010 12:30
कुम्भ	27-07-2011 12:30
मकर	23-07-2012 12:30
धनु	15-09-2013 12:30

मकर (12 वर्ष)

15-09-2013 12:30
15-09-2025 12:30

धनु	10-09-2014 12:30
वृश्चिक	05-09-2015 12:30
तुला	31-08-2016 12:30
कन्या	26-08-2017 12:30
सिंह	21-08-2018 12:30
कर्क	16-08-2019 12:30
मिथुन	11-08-2020 12:30
वृष	06-08-2021 12:30
मेष	01-08-2022 12:30
मीन	27-07-2023 12:30
कुम्भ	23-07-2024 12:30
मकर	15-09-2025 12:30

चर दशा - II

कुम्भ (12 वर्ष)	
15-09-2025 12:30	
15-09-2037 12:30	
मकर	10-09-2026 12:30
धनु	05-09-2027 12:30
वृश्चिक	31-08-2028 12:30
तुला	26-08-2029 12:30
कन्या	21-08-2030 12:30
सिंह	16-08-2031 12:30
कर्क	11-08-2032 12:30
मिथुन	06-08-2033 12:30
वृष	01-08-2034 12:30
मेष	27-07-2035 12:30
मीन	23-07-2036 12:30
कुम्भ	15-09-2037 12:30

मीन (6 वर्ष)	
15-09-2037 12:30	
15-09-2043 12:30	
मेष	16-03-2038 12:30
वृष	14-09-2038 12:30
मिथुन	15-03-2039 12:30
कर्क	13-09-2039 12:30
सिंह	13-03-2040 12:30
कन्या	11-09-2040 12:30
तुला	12-03-2041 12:30
वृश्चिक	10-09-2041 12:30
धनु	11-03-2042 12:30
मकर	09-09-2042 12:30
कुम्भ	10-03-2043 12:30
मीन	15-09-2043 12:30

मेष (3 वर्ष)	
15-09-2043 12:30	
15-09-2046 12:30	
वृष	15-12-2043 12:30
मिथुन	15-03-2044 12:30
कर्क	15-06-2044 12:30
सिंह	15-09-2044 12:30
कन्या	15-12-2044 12:30
तुला	15-03-2045 12:30
वृश्चिक	15-06-2045 12:30
धनु	15-09-2045 12:30
मकर	15-12-2045 12:30
कुम्भ	15-03-2046 12:30
मीन	15-06-2046 12:30
मेष	15-09-2046 12:30

चर दशा - III

वृष (5 वर्ष)

15-09-2046 12:30
15-09-2051 12:30

मिथुन	14-02-2047 12:30
कर्क	14-07-2047 12:30
सिंह	14-12-2047 12:30
कन्या	14-05-2048 12:30
तुला	14-10-2048 12:30
वृश्चिक	16-03-2049 12:30
धनु	15-08-2049 12:30
मकर	14-01-2050 12:30
कुम्भ	13-06-2050 12:30
मीन	12-11-2050 12:30
मेष	11-04-2051 12:30
वृष	15-09-2051 12:30

मिथुन (2 वर्ष)

15-09-2051 12:30
15-09-2053 12:30

वृष	16-11-2051 12:30
मेष	17-01-2052 12:30
मीन	18-03-2052 12:30
कुम्भ	19-05-2052 12:30
मकर	20-07-2052 12:30
धनु	21-09-2052 12:30
वृश्चिक	22-11-2052 12:30
तुला	23-01-2053 12:30
कन्या	24-03-2053 12:30
सिंह	25-05-2053 12:30
कर्क	26-07-2053 12:30
मिथुन	15-09-2053 12:30

कर्क (5 वर्ष)

15-09-2053 12:30
15-09-2058 12:30

मिथुन	14-02-2054 12:30
वृष	14-07-2054 12:30
मेष	14-12-2054 12:30
मीन	14-05-2055 12:30
कुम्भ	14-10-2055 12:30
मकर	15-03-2056 12:30
धनु	14-08-2056 12:30
वृश्चिक	13-01-2057 12:30
तुला	12-06-2057 12:30
कन्या	11-11-2057 12:30
सिंह	10-04-2058 12:30
कर्क	15-09-2058 12:30

https://divinemessenger.in/

चर दशा - IV

सिंह (12 वर्ष)		कन्या (11 वर्ष)		तुला (10 वर्ष)	
15-09-2058 12:30		15-09-2070 12:30		15-09-2081 12:30	
15-09-2070 12:30		15-09-2081 12:30		15-09-2091 12:30	
कर्क	10-09-2059 12:30	तुला	10-08-2071 12:30	वृश्चिक	12-07-2082 12:30
मिथुन	05-09-2060 12:30	वृश्चिक	06-07-2072 12:30	धनु	09-05-2083 12:30
वृष	31-08-2061 12:30	धनु	01-06-2073 12:30	मकर	07-03-2084 12:30
मेष	26-08-2062 12:30	मकर	27-04-2074 12:30	कुम्भ	03-01-2085 12:30
मीन	21-08-2063 12:30	कुम्भ	25-03-2075 12:30	मीन	30-10-2085 12:30
कुम्भ	16-08-2064 12:30	मीन	20-02-2076 12:30	मेष	26-08-2086 12:30
मकर	11-08-2065 12:30	मेष	15-01-2077 12:30	वृष	22-06-2087 12:30
धनु	06-08-2066 12:30	वृष	11-12-2077 12:30	मिथुन	18-04-2088 12:30
वृश्चिक	01-08-2067 12:30	मिथुन	06-11-2078 12:30	कर्क	14-02-2089 12:30
तुला	27-07-2068 12:30	कर्क	02-10-2079 12:30	सिंह	11-12-2089 12:30
कन्या	23-07-2069 12:30	सिंह	28-08-2080 12:30	कन्या	08-10-2090 12:30
सिंह	15-09-2070 12:30	कन्या	15-09-2081 12:30	तुला	15-09-2091 12:30

*ध्यान दे – सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते है।

https://divinemessenger.in/

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहो के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योंकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहो से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहो के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संभंधित परेशानिया, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसिलए मात्र कालसर्प सुनकर भयभीत हो जाने की जरुरत नहीं बिल्क उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके पर्भावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमता कही जायेगी। कालसर्प योग कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधवत तरह से यिद इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्धि योग भी बन सकता है।

महत्वपूर्ण कालसर्प दोष के 12 प्रकार।

- अनन्त
- कुलिक
- वासुकी
- शंखपाल
- पद्म
- महापद्म
- तक्षक
- कर्कोटक
- शंखचूड़
- घातक
- विषधर
- शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

कालसर्प की उपस्थिति नहीं है

आपकी कुंडली में कालसर्प दोष नहीं है।

कालसर्प नाम

नहीं

कालसर्प दोष का प्रभाव

कालसर्प दोष के उपाय

- कुंडली में कालसर्प योग के नकारात्मक प्रभावों को बेअसर करने के लिए आप कुछ मंत्रों का जाप कर सकते हैं। मंत्र श्री सर्प सूक्त, सर्प मंत्र, विष्णु पंचाक्षरी मंत्र और महा मृत्युंजय मंत्र हैं।
- आप पवित्र नदी में डुबकी लगाने के लिए रामेश्वरम मंदिर भी जा सकते हैं।
- आपको कभी भी किसी सांप और सरीसृप आदि को चोट या मारना नहीं चाहिए। आप अपने पूर्वजों के कारण पीड़ित हो सकते हैं जिन्होंने सांप और सरीसृपों को मार डाला।
- कालसर्प योग से छुटकारा पाने के लिए आप गोमेद और लहसुनिया स्टोन भी पहन सकते हैं। हालांकि इस रत्न को धारण करने से पहले किसी विद्वान ज्योतिषी की सलाह अवश्य लें।
- घर में पूजा स्थल या पूजा कक्ष में एक सक्रिय कालसर्प योग यंत्र स्थापित करें और उसकी प्रतिदिन पूजा करें।

मांगलिक विश्लेषण - I

मांगलिक दोष क्या होता है?

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आिद में मंगल गर्ह, लग्न से पर्थम, चतुथर्, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

जब मंगल लग्न में होता है तो मंगल लग्न में मंगल के साथ होने पर मांगलिक दोष अधिक प्रबल माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार यदि लड़का और लड़की दोनों का मांगलिक दोष रद्द हो रहा है तो उन्हें सुखी वैवाहिक जीवन में कोई रुकावट नहीं आएगी है।

वहीं दूसरी ओर यदि यह मांगलिक दोष रद्द नहीं किया गया तो उन्हें जीवन में अनावश्यक समस्याओं और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

इसलिए किसी को भी अपनी कुंडली का मिलान करने के बाद ही अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत करनी चाहिए। मांगलिक दोष को ठीक से रद्द करने के बाद जातक को एक शांतिपूर्ण और समृद्ध से भरा जीवन प्राप्त होगा।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे ।
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् । ।

मांगलिक विश्लेषण

☹

आप की कुंडली में मांगलिक दोष है

आपकी कुंडली में निम्न मंगल दोष पाया गया है।

मांगलिक का प्रकार

निम्न मंगल दोष

https://divinemessenger.in/

मांगलिक विश्लेषण - II

मांगलिक फल

आपकी कुंडली में निम्न मंगल दोष है और वर्तमान में मंगल दोष की सीमा प्रभावी है और इसलिए उचित सावधानी की आवश्यकता है। आपकी कुंडली में मांगलिक दोष है। जन्म कुण्डली में मंगल लग्न से आठंवें भाव में तथा चन्द्र कुण्डली में मंगल छटे भाव में स्थित है।

मांगलिक दोष के उपाय

- वर और वधू दोनों का मांगलिक दोष होने पर विवाह सफल हो सकता है।
- मंगलवार का व्रत करना भी उत्तम उपाय है। व्यक्ति को केवल दूध या फलों के रस का ही सेवन करना चाहिए और केवल तुअर दाल का ही सेवन करना चाहिए।
- व्यक्ति को प्रतिदिन हनुमान चालीसा, गायत्री मंत्र और मंगल चंडिका स्तोत्र जैसे मंत्रों का पाठ करना चाहिए। नवग्रह मंत्र का जाप करने से भी मदद मिलती है, क्योंकि यह मंत्र गलत तरीके से रखे गए मंगल को शांत करता है।
- मंगलवार के दिन दान करना मांगलिक व्यक्तियों के लिए एक उपाय माना जाता है।

साढ़ेसाती विश्लेषण - I

साढ़ेसाती क्या होता है?

साढ़े साती का तात्पर्य साढ़े सात वर्ष की अवधि से है, जिसमें शनि तीन राशियों से होकर गुजरता है, चंद्र राशि, एक चंद्रमा से पहले और एक उसके बाद। साढ़े साती तब शुरू होती है जब शनि (शनि) जन्म चंद्र राशि से बारहवीं राशि में प्रवेश करता है और जब शनि जन्म चंद्र राशि से दूसरी राशि छोड़ता है तो समाप्त होता है।

चूँकि शनि को एक राशि को पार करने में लगभग ढाई साल लगते हैं जिसे शनि की ढैया कहा जाता है, इसलिए तीन राशियों को पार करने में लगभग साढ़े सात साल लगते हैं और इसीलिए इसे साढ़े साती के नाम से जाना जाता है। सामान्यतः साढ़ेसाती जीवन काल में तीन बार आती है-पहली बाल्यावस्था में, दूसरी यौवन में और तीसरी वृद्धावस्था में।

प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा और माता-पिता पर पड़ता है। दूसरी साढ़ेसाती का प्रभाव व्यवसाय, वित्त और परिवार पर पड़ता है। आखिरी वाला स्वास्थ्य को किसी और चीज से ज्यादा प्रभावित करता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है?

☹

साढ़ेसाती दोष उपस्थिति है

हां, वर्तमान में आप साढ़ेसाती से गुजर रहे हैं।

विचार करने की दिनांक	04-01-2022
शनि राशि	कुंभ
चंद्र राशि	मकर
वक्री शनि	हाँ

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	चरण	आरम्भ तिथि	समाप्ति तिथि	प्रभाव
मकर	1	11-12-1986	18-03-1989	सम
मकर	2	18-03-1989	02-03-1992	लाभप्रद
मकर	3	02-03-1992	18-02-1995	लाभप्रद
मकर	1	22-01-2016	18-01-2019	सम
मकर	2	18-01-2019	08-05-2021	लाभप्रद
मकर	3	08-05-2021	30-03-2024	लाभप्रद
मकर	1	01-12-2045	02-03-2048	सम
मकर	2	02-03-2048	21-02-2051	लाभप्रद
मकर	3	21-02-2051	25-05-2053	लाभप्रद
मकर	1	11-01-2075	08-01-2078	सम
मकर	2	08-01-2078	12-04-2080	लाभप्रद
मकर	3	12-04-2080	21-03-2083	लाभप्रद
मकर	1	23-11-2104	19-02-2107	सम
मकर	2	19-02-2107	13-02-2110	लाभप्रद
मकर	3	13-02-2110	07-05-2112	लाभप्रद

साढ़ेसाती उपाय

- अपने अधीनस्थ, नौकर, गरीब और निम्न वर्ग के लोगों को सम्मान दें।
- अपने माता-पिता और बुजुर्गों की सेवा और सम्मान करें।
- श्री हनुमान चालीसा का पाठ करें।

रत्न उपाय विचार

प्रत्येक ग्रह का अपना अनूठा संबंधित ज्योतिषीय रत्न होता है जो ग्रह के समान ही ब्रह्मांडीय रंग ऊर्जा को विकीर्ण करता है। रत्न सकारात्मक किरणों के परावर्तन या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा कार्य करते हैं। उपयुक्त रत्न को धारण करने से मणि फिल्टर के रूप में उस पर संबंधित ग्रह के सकारात्मक प्रभाव में वृद्धि हो सकती है और पहनने वाले के शरीर में केवल सकारात्मक स्पंदनों को प्रवेश करने की अनुमति मिलती है।

जीवन रत्न

लाल मूंगा

लग्न, शरीर और शरीर से सम्बंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, नाम, दीघार्यु, प्रतिष्ठा, जीवन उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है। इसलिए लग्न के स्वामी अथार्त लग्नेश से सम्बंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है। इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए।

कारक रत्न

पुखराज

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुिद्ध, उच्च शिक्षा, संतान, अपर्त्यिाशत धन-प्राप्ति आदि का कारक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अथार्त पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है। इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं। पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

पन्ना

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है। यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का कारक है। यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मो में किये गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है। नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं। इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है।

लाल मूंगा

विकल्प	रेड जैस्पर	**दिन**	मंगलवार
उंगली	अनामिका	**देव**	मंगल
धातु	शरीर के वजन के अनुसार	**धातु**	ताम्बा / सोना

विवरण

लाल मूंगा मंगल ग्रह द्वारा शासित रत्न है। लाल मूंगा धारण करने से व्यक्ति साहसी बनता है और उसके शत्रु परास्त होते हैं। लाल मूंगा बुरी आत्माओं, जादू टोना, बुरे सपनों जैसे चीजों से बचाता है।

भार व धातु

लाल मूंगा आपके शरीर के वजन के अनुसार जैसे: 1 कैरेट 10 किलो के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 53 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक लाल मूंगा चुनना होगा। इसे सोने की तांबे की अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि पत्थर त्वचा को छुए।

पहनने का समय

लाल मूंगा मंगलवार की सुबह (सूर्योदय के एक घंटे के भीतर) चंद्र मास के शुक्ल पक्ष में धारण करना चाहिए।

मंत्र

एक बार अनुष्ठान पूरा हो जाने पर व्यक्ति को फूल और धूप से पत्थर की पूजा करनी चाहिए। लाल मूंगा निम्न मंत्र का 10000 बार जाप करने के लिए।

।। ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ।।

प्राण प्रतिष्ठा

मूंगा धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगाजल में दो दिन तक डुबो कर रखना चाहिए।

उंगली

मंत्र जाप के बाद लाल मूंगा दाहिने हाथ की अनामिका में धारण करना चाहिए।

विकल्प

कोई भी लाल मूंगे के विकल्प जैसे संग मूंगी, कारेलियन और रेड जैस्पर का उपयोग कर सकता है।

सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लाल मूंगा को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद और वैदूर्य उनके विकल्प के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न

पुखराज

विकल्प	टोपाज	**दिन**	गुरुवार
उंगली	पहली उंगली (अंगूठे से)	**देव**	बृहस्पति
धातु	शरीर के वजन के अनुसार	**धातु**	सोना

विवरण

पुखराज बृहस्पति द्वारा शासित रत्न है। पुखराज धारण करने से ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, यश, सदाचार, उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। पुखराज बुरी आत्माओं से रक्षा करता है।

भार व धातु

पुखराज का वजन आपके शरीर के वजन के अनुसार होना चाहिए जैसे: 1 कैरेट 10 किलो के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 56 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक पीला नीलम चुनना होगा। इसे सोने की अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि पत्थर त्वचा को छुए।

पहनने का समय

पुखराज को गुरुवार की सुबह (सूर्योदय के एक घंटे के भीतर) चंद्र मास के शुक्ल पक्ष में धारण करना चाहिए।

मंत्र

एक बार अनुष्ठान पूरा हो जाने के बाद व्यक्ति को फूल और धूप के साथ पुखराज की पूजा करनी चाहिए। पुखराज के लिए आप निम्न मंत्र को चुन कर 19,000 बार मंत्र का जाप करे।

।। ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम: ।।

प्राण प्रतिष्ठा

पुखराज धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगाजल में दो दिन तक डुबाकर रखना चाहिए। उसके बाद अंगूठी को बाहर निकालकर, आपको हवन के दौरान विष्णु जी की पूजा के साथ साथ 19000 गुरु मंत्र का जाप करना चाहिए।

उंगली

मंत्र जाप के बाद पुखराज को दाहिने हाथ की पहली उंगली (अंगूठे से) में धारण करना चाहिए।

विकल्प

कोई भी येलो मोती, येलो जिरकोन, येलो टूमलाइन या पुखराज जैसे पीले मोती के विकल्प का उपयोग कर सकता है।

सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पुखराज को ओपल, हीरा, नीलम, गोमेद और वैदूर्य के साथ नहीं पहनना चाहिए।

भाग्य रत्न

पन्ना

विकल्प	पेरिडॉट	**दिन**	बुधवार
उंगली	कनिष्ठा	**देव**	बुध
धातु	शरीर के वजन के अनुसार	**धातु**	सोना

विवरण

भारतीय वैदिक ज्योतिष के अनुसार पन्ना पत्थर पर बुध का शासन है। पन्ना धारण करने से अच्छा स्वास्थ्य, व्यापार, मजबूत शरीर, धन, संपत्ति, अच्छी नजर आती है। पन्ना बुरी आत्माओं, कीड़ों, बुरी नजर के बुरे प्रभाव से बचाता है। पन्ना मिर्गी, पागलपन, बुरे सपने आदि को दूर करता है और सुरक्षा प्रदान करता है।

भार व धातु

अपने शरीर के वजन के अनुसार पन्ना चुनें जैसे: 1 कैरेट 10 किग्रा के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 52 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक पन्ना चुनना होगा। इसे सोने की अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि पत्थर त्वचा को छुए।

पहनने का समय

पन्ना बुधवार की सुबह (सूर्योदय के एक घंटे के भीतर) चंद्र मास के शुक्ल पक्ष में धारण करना चाहिए।

मंत्र

एक बार अनुष्ठान पूरा हो जाने पर व्यक्ति को फूल और धूप से पत्थर की पूजा करनी चाहिए। पन्ना के लिए निम्न मंत्र का 9000 बार जाप करना है।

।। ॐ ब्रां ब्रीं सः बुधाय नमः ।।

प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगाजल में दो दिन तक डुबो कर रखना चाहिए।

उंगली

मंत्र जाप के बाद पन्ना दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में धारण करना चाहिए।

विकल्प

पन्ना के विकल्प जैसे ग्रीन ओनाक्स, पेरिडॉट, ग्रीन जिक्रोन, ग्रीन एगेट या जेड का भी उपयोग किया जा सकता है।

सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लाल मूंगे, मोती या पुखराज के साथ पन्ना नहीं पहना जाना चाहिए।

रुद्राक्ष फल

चौदह + सत्रह मुखी रुद्राक्ष

॥ ॐ नमः शिवाय॥
॥ ॐ ह्रीं हुं हौं नमः ॥

आपको चौदह मुखी और सत्रह मुखी रुद्राक्ष के संयोजन को धारण करने की सलाह दी जाती है।

चौदह मुखी रुद्राक्ष को हमारे प्राचीन ग्रंथों में सबसे कीमती और दिव्य रत्न (देव मणि) माना गया है। यह शक्तिशाली रुद्राक्ष भगवान हनुमान द्वारा शासित है, जिनका इंद्रियों पर पूर्ण स्वामित्व है। यह रुद्राक्ष पहनने वाले को निडर बनाता है और स्वाभाविक रूप से सफलता प्राप्त करने के लिए जोखिम लेने की प्रवृत्ति विकसित करता है। इस दिव्य चौदह मुखी रुद्राक्ष पर मंगल और शनि का शासन है। यह दिव्य और दुर्लभ चौदह मुखी रुद्राक्ष मंगल और शनि के सभी नकारात्मक प्रभावों को दूर करता है और शांत करता है। इसके विपरीत कमजोर मंगल आपको आवेगी, अधीर, आक्रामक और शक्तिशाली बनाता है।

सत्रह मुखी रुद्राक्ष देवी कात्यायनी और देवी दुर्गा के सबसे शक्तिशाली रूपों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि रुद्राक्ष की माला पहनने वाले को संतान, समृद्धि, सौभाग्य और बहुतायत का आशीर्वाद प्राप्त होता है। यह पहनने वाले की इच्छाओं को पूरा करता है और धन उत्पन्न करने की शक्ति को बढ़ाता है। इसके अलावा सत्रह मुखी रुद्राक्ष भी पहनने वाले को एक अच्छा जीवनसाथी पाने में मदद करता है। सत्रह मुखी रुद्राक्ष पर शनि ग्रह का शासन है। यह देवी ऊर्जा के साथ संबंध बढ़ाता है, और पहनने वाले को अपने जीवन से सभी बाधाओं को दूर करने में मदद करता है और अपार शक्ति और दिव्य चुंबकत्व दिखाता है।

शुभाशुभ अंक

आपका नाम	Sanjay Sharma
जन्म दिनांक	15-9-1994
मूलांक	6
मूलांक स्वामी	शुक्र
मित्र अंक	4,3,9
सम अंक	2,5,7
शत्रु अंक	1,8
शुभ दिन	गुरूवार, मंगलवार, शुक्रवार
शुभ रत्न	हीरा, ओपल
शुभ उपरत्न	जिरकॉन , सफेद नीलम
शुभ देवता	देवी
शुभ धातु	चांदी
शुभ रंग	सफेद
शुभ मंत्र	|| ओम शुम शुक्राय नमः ||

अंक ज्योतिषीय फल - I

आपके बारे में

आपका मूलांक अगर 6 है, तो इसका स्वामी ग्रह शुक्र है। मूलांक 6 के प्रभाव से आपमें चुंबकीय आकर्षण रहेगा। आप मिलनसार और मित्रों से प्रेम करने वाले रहेंगे। इन गुणों के कारण आप लोगों को पसंद आएंगे। खूबसूरती और खूबसूरत चीजों की ओर आपका आकर्षित होना स्वाभाविक होगा। विपरीत लिंग के लोगों पर आप मोहित होंगे और सुंदर स्त्री-पुरुषों के साथ संबंध बनाए रखना और उनके साथ बातचीत करना आपका स्वभाव होगा। आपकी ललित कलाओं में रुचि होगी, जिसे आप अपने करियर या व्यवसाय के रूप में भी चुन सकते हैं।

आप संगीत-साहित्य, पेंटिंग और मूर्तियों आदि के शौकीन होंगे। आप अच्छे कपड़े और अच्छी तरह से सजाए गए घरों की कल्पना करेंगे। मेहमानों का मनोरंजन करने में आपको गर्व होगा। आप अपने घर और कार्यालय में सभी वस्तुओं को अच्छी तरह से सजाकर रखना और बेहतरीन फर्नीचर, पर्दे आदि रखना पसंद करेंगे। स्वभाव से, आप थोड़े हठी होंगे। आप यह सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे कि आपसे बात करने वाला कोई भी व्यक्ति आपके दृष्टिकोण को स्वीकार करे। अपने विचारों पर स्थिर रहना और ईर्ष्या करना भी आपके स्वभाव का हिस्सा है। अपने काम में प्रतिस्पर्धा को सहन करना आपके लिए मुश्किल होगा। इससे तनाव और अपराध बोध हो सकता है। आप दिल जीतने में अपनी विशेषज्ञता बनाए रखेंगे। आपके बहुत सारे दोस्त होंगे क्योंकि आप सबका दिल जीतने में माहिर हैं।

शुभ व्रत समय

शुक्रवार के दिन शुक्र भगवान का व्रत किया जाता है जो की धन, विवाह, संतान और भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए किया जाता है और इसे शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से शुरू करना चाहिए। सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि पूर्ण कर लें। भगवान शुक्र या देवी संतोषी मां की मूर्ति या चित्र लगाएं।

पूजा सामग्री में गुड़, चना और पानी जैसी इन सब चीज को एक बड़े बर्तन में रख लें. भगवान शुक्र या देवी संतोषी माँ की पूजा व्यवस्थित तरीके से करें। इसके बाद भगवान शुक्र या देवी संतोषी माँ की कथा सुनी जाती है और उसके बाद गुड़ और चने का प्रसाद लोगों में बांटा जाता है। अंत में बड़े बर्तन का पानी घर में छिड़कें और बचे हुए पानी को तुलसी के पौधे में डालें। इसी प्रकार 11 या 21 शुक्रवार तक नियमित रूप से इस व्रत का पालन करें।

शुभ वास्तु

अगर आप अपना घर बनाना चाहते हैं तो उसके लिए सही दिशा का चुनाव करें। आपके लिए दक्षिण-पूर्व (अग्निकोण) अच्छा है। घर का अंक 3, 6 या 9 से हो तो अच्छा रहेगा।

शहर के दक्षिण-पूर्व या अपने घर के दक्षिण-पूर्व भाग में निवास करें। ये आपके लिए अच्छा रहेगा। अगर आप अपने रोजगार में इन नियमों का पालन करते हैं तो यह आपके लिए फायदेमंद रहेगा। आपके घर या फर्नीचर का रंग हल्का नीला या आसमानी नीला होना चाहिए।

शुभ गायत्री मंत्र

शुक्र के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए आपको सुबह 11, 21 या 108 बार शुक्र गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए।

|| ॐ अश्वध्वजाय विद्महे धनुर्हस्ताय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ||

शुभ ध्यान समय

शुक्र के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए आपको सुबह 11, 21 या 108 बार शुक्र गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए।

|| ॐ अश्वध्वजाय विद्महे धनुर्हस्ताय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ||

अंक ज्योतिषीय फल - III

शुभ मंत्र

शुक्र या देवी दुर्गा की पूजा करें। "ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः" मंत्र का प्रतिदिन कम से कम 108 बार जाप करें।

अष्टमी(भारतीय कैलंडर की 8वीं तारीख को) को व्रत रखें और दुर्गा सप्तशती का पाठ करें। इससे आपको तरह-तरह की परेशानियों और बीमारियों से निजात मिलेगा । अगर आपके लिए यह संभव नहीं है तो रोजाना सुबह देवी दुर्गा की तस्वीर देखें।

आपके के लिए शुभ समय

पाश्चात्य दृष्टिकोण के अनुसार सूर्य वृष राशि में 21 अप्रैल से 21 मई तक और तुला राशि में 24 सितंबर से 13 अक्टूबर तक रहता है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार ये अवधि 13 मई से 14 जून और 17 अक्टूबर से 13 नवंबर तक रहती है।

ये राशियां शुक्र की हैं और 14 मार्च से 12 अप्रैल यानी मीन राशि में शुक्र उच्च का होता है। अत: ऊपर बताए गए काल मूलांक 6 के जातकों के लिए कोई नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य देखने के लिए भाग्यशाली होता हैं।

वृश्चिक

वैदिक नाम	वृश्चिक
स्वामी	मंगल
प्रतिक	बिच्छू
तत्त्व	जलीय
भाग्यशाली रत्न	पन्ना

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम्।
सुखं दुःखं स्वभावश्च लग्नभावान्नरीक्षयेत॥

वृश्चिक राशि के जातक गुप्त, गहरे, चुप रहने वाले, रहस्यमय, पुनर्जीवित या पतित, आरक्षित, समझने में सक्षम, साहसी, दृढ़ इच्छाशक्ति वाले, लगातार, विचारों में जिद्दी, रचनात्मक, आत्मनिर्भर, आत्म-नियंत्रित (शायद जुनून के अलावा) होते हैं), और चुप।

आध्यात्मिक ज्योतिषी इसाबेल हिक्की के अनुसार, वृश्चिक राशि के उदय के साथ कोई भी अविकसित आत्मा पैदा नहीं होती है। यह एक बिजलीघर के उदय का संकेत है।

> "यह युद्ध के मैदान का प्रतिनिधित्व करता है जहां उच्च और निम्न स्वयं को नश्वर युद्ध के लिए आना चाहिए। उन्हें संरेखित किया जाना चाहिए और निचले स्व के बजाये आपको अपने उच्चतर स्व, से ईश्वर के बताये हुए रास्ते पर चलना चाहिए और उनका पालन करना चाहिए।

शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर सभी आपमें शामिल हैं। आप ऊपर तौर पे शांत दिखते हैं, लेकिन आप अंदर से बेहद भावुक हो सकते हैं। "अभी भी पानी गहरा बहता है", जैसा कि वे कहते हैं। आप शांत किसम के होते हैं, हमेशा दूसरों की प्रेरणाओं को जानना चाहते हैं, लेकिन अपने स्वयं के बारे में कभी भी कुछ खुलासा नहीं करते हैं।

आप जासूस या खोज जैसे खेल खेलना पसंद करते हैं। आपको सब कुछ जानना होगा, कैसे और क्यों। आपके पास जोश के साथ-साथ दृढ़ संकल्प और ताकत है, जो किसी भी विरोधी को, यहां तक कि खुद को भी मात देने के लिए पर्याप्त है।

> "आपको आक्रोश, अधिकार और ईर्ष्या को दूर करने की आवश्यकता है। मनोगत, मृत्यु, सेक्स या उपचार के प्रति आकर्षण, व्यस्तता, रुचि और/या क्षमता हो सकती है।

आप शैतान या देवदूत, चील या चुभने वाले बिच्छू हो सकते हैं। सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक: क्षमा। मंगल और प्लूटो वृश्चिक राशि पर शासन करते हैं इसलिए मंगल और प्लूटो आपके चार्ट में महत्वपूर्ण होंगे।

सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

माफी

सकारात्मक लक्षण

जन्म रत्न	लाल मूंगा
अनुकूल राशी	वृषभ
उपवास का दिन	शुक्रवार
भाग्यशाली रंग	लाल, सफेद, पीला
भाग्यशाली दिन	रविवार, सोमवार, गुरुवार
शुभ संख्याएं	1,2,5
अनुकूल दिशा	उत्तर
विशेषताए	उग्र, चौकस

नकारात्मक लक्षण

गुणवत्ता की आवश्यकता	दृष्टि

आपकी कुंडली में
ग्रहों का विश्लेषण

सूर्य

ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्ति शाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्त्रोत है। सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊजार्, शिक्त, पिता , सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शिक्त को कारक कहा जाता है।

आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
सिंह	28:25:51	उत्तर फल्गुनी - 1
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
दशवें भाव	दशवें भाव	नहीं/मृत

सूर्य आपकी कुंडली मे शुभ है

सूर्य आपकी कुंडली मे दशवें भाव मे है

दूसरों के लाभ के लिए सफलता और शक्ति प्राप्त करने की या किसी और के बारे में सोचे बिना अपने लिए सफलता और शक्ति प्राप्त करने की इच्छा हो सकती है।

> आप खुद को साबित करना चाहते हैं और अपनी उपलब्धियों के लिए पहचाने जाते हैं।

आप वास्तव में कुछ अच्छा बनना चाहते हैं। करियर और/या व्यक्तिगत उपलब्धियों में सफल होने की प्रबल प्रेरणा होती है। आप अपने उदाहरण से दूसरों को प्रेरित करने की क्षमता रखते हैं। संभव है की आप महत्वाकांक्षी और आत्म-उन्नति को लेकर प्ररित रहते है। उच्च पदों पर बैठे लोग आपके करियर में मदद या रूकावट डाल सकते हैं।

सूर्य आपकी कुंडली मे सिंह राशी मे है

सिंह प्रतिष्ठित, साहसी, स्नेही, शक्तिशाली, उदार, चंचल, आशावादी, महत्वाकांक्षी, वफादार और हंसमुख होते हैं। नकारात्मक पक्ष

पर, हालांकि, वे काफी मांग, असहिष्णु, दबंग, आलसी, बंद दिमाग और आत्म-केंद्रित हो सकते हैं। वे ऐसे काम करना चुनते हैं जो उन्हें रचनात्मकता, आयोजन और नेतृत्व के लिए व्यापक गुंजाइश देते हैं। हालांकि बाहर से मजबूत दिखने वाले अधिकांश सिंह आंतरिक रूप से संवेदनशील होते हैं और उनकी भावनाओं को आसानी से ठेस पहुंचती है। जब ऐसा होता है, तो वे अपने स्नेह की वस्तु को चालू कर सकते हैं, जब उनके अभिमान को ठेस पहुँचती है।

> "लेओस के पास नाटकीय के लिए एक निश्चित स्वभाव है और वे कहानियों को बताने, ध्यान का केंद्र होने, अच्छा समय बिताने और शो चलाने का आनंद लेते हैं। मतलबी और क्रूर कृत्य आमतौर पर उनके नीचे होते हैं, लेकिन जरूरत पड़ने पर वे बल प्रयोग करने से नहीं हिचकते। उनके कार्य चाहे जो भी हों, उन्हें हमेशा यह विश्वास रहता है कि वे जो कुछ भी करते हैं वह दूसरे व्यक्ति के लाभ के लिए होता है।

यदि कोई सिंह क्रोधित होता है, तो वह तुरंत अपनी राजसी भूमिका में चला जाता है, "अपने सिंहासन पर चढ़ता है" और जल्दी से विपक्ष या चुनौती देने वाले को उनके उचित स्थान पर रखता है। जब लोग गुस्से में होते हैं तो लेओस सचमुच लोगों पर दहाड़ते हैं। लेकिन एक बार जब उनका अत्याचार समाप्त हो जाता है, तो वे क्षमा कर देते हैं और भूल जाते हैं और कभी कोई द्वेष नहीं रखते।

अपने सबसे अच्छे रूप में, सिंह स्नेही, हंसमुख, आशावादी लोग होते हैं जिन्हें अन्य लोगों के जीवन में धूप लाने के लिए गिना जा सकता है। वे असाधारण उदार हैं। पैसा उनकी उंगलियों से फिसलता हुआ प्रतीत होता है जैसे कि वह रेत के दाने हों। और, रेत की तरह, उन्हें पता नहीं है कि वह कहाँ गई है।

> "सिंह राशि के जातकों में आमतौर पर जीवन शक्ति और अच्छा स्वास्थ्य होता है, जिसमें मजबूत स्वास्थ्यवर्धक शक्तियां होती हैं। जब वे बीमार होते हैं तो उनमें तेज बुखार आने की प्रवृत्ति होती है। वे शायद ही कभी उदास होते हैं, लेकिन जब वे होते हैं, तो वे तबाह हो जाते हैं। सौभाग्य से, उनकी लचीला शक्तियां उत्कृष्ट हैं, इसलिए वे जल्द ही धूप और फिर से खुश हैं, जब तक कि उनका दिल नहीं टूटा हो। यही एक चीज है जिस पर लियो को काबू पाने में कठिनाई होती है। यह वास्तव में उनके अपने दिल से शारीरिक परेशानी का कारण बन सकता है।

सिंह राशि वालों को अपने विवाह साथी की प्रशंसा करने की आवश्यकता है। यदि वे नहीं करते हैं, तो शादी बहुत लंबे समय तक नहीं चल सकती है। अंत में, सिंह राशि के लोगो को सराहना महसूस करने की आवश्यकता है।

सूर्य मंत्र	॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ॥

चंद्र

चंद्रमा में मन, इच्छा शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा जल और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा है, यह एक अस्थिर ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है।

आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
मकर	04:08:48	उत्तर आषाढ़ - 3
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
नववें भाव	तीसरे भाव	नहीं/मृत

चंद्र आपकी कुंडली मे अपरिभाषित है

चंद्र आपकी कुंडली मे तीसरे भाव मे है

आप बौद्धिक जिज्ञासा रखते हैं और भाषण, कविता या लेखन के माध्यम से अपनी सच्ची भावनाओं को अच्छी तरह व्यक्त कर सकते हैं। आपकी भावनाओं का बौद्धिककरण संभव है। संचार के लिए और जानकारी एकत्र करने की एक मजबूत आवश्यकता है, जिसे बाद में सामान्य रूप से लोगों या विशेष रूप से महिलाओं के साथ साझा किया जाता है।

> आपके पास हास्य की अच्छी समझ है और आप मजाक करना और खेलना पसंद करते हैं। यात्रा आपको आकर्षित करती है क्योंकि यह सीखने के नए अवसर प्रदान करती है।

किसी भी तरह की दिनचर्या शायद आपको बोर करती है और आप लगातार विविधता की तलाश में रहते हैं। आपके विचार एक पल की सूचना पर बदल जाते हैं और आप हमेशा के लिए लचीले और किसी भी स्थिति के अनुकूल होते हैं। सीखना शायद पढ़ने के बजाय सुनने के माध्यम से बेहतर हासिल किया जाता है।

आपका मन कई बार काफी भावुक हो सकता है। व्यवसाय के संबंध में संचार और सूचना के आदान-प्रदान पर जोर दिया गया है। आपका व्यक्तित्व जानकारी एकत्र करता है, साझा करता है और प्रतिक्रिया करता है। यह स्थिति मध्यस्थ, गो-बीच और प्रसार कार्यों का प्रतिनिधित्व करती है।

चंद्र आपकी कुंडली मे मकर राशी मे है

आप बहुत गंभीर और जिम्मेदार होते हैं, यह सोचकर कि कर्तव्य सबसे पहले है। आप सभी को अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने में सहज नहीं हैं और आप निश्चित रूप से नहीं चाहते कि वे सोचें कि आपको सहायता और समर्थन की आवश्यकता है। आप कभी भी भावनात्मक रूप से कमजोर नहीं दिखना चाहते। आपके भीतर महत्वाकांक्षा की एक बड़ी भावना है, शायद इसलिए कि आप अप्रभावित, अवांछित या अपर्याप्त महसूस करते हैं। आप तब बहुत मेहनत करते हैं क्योंकि यह आपको महत्वपूर्ण या आवश्यक महसूस कराता है।

> “आपको अपने अधिकार में सुरक्षित महसूस करने की आवश्यकता है। सुरक्षा की जरूरतें ही आपको प्रेरित करती हैं। आप अपने स्वयं के मूल्य को लेकर शर्मीले और असुरक्षित हो सकते हैं और वास्तविक या काल्पनिक दुखों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो सकते हैं। कभी-कभी आपको ऐसा लगता है कि आपको दुनिया का भार अपने कंधों पर ढोना है।

आप भावनात्मक निर्भरता के साथ विशेष रूप से असहज हैं, और खुद को और दूसरों (यहां तक कि बच्चों को) को “बच्चा” नहीं बनने के लिए कहेंगे। आपको यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि कोई भी हर समय आत्मनिर्भर नहीं है, और अपनी “बचकाना” भावनात्मक जरूरतों और चाहतों के साथ विनम्र होना चाहिए। दूसरों के लिए, आप उनकी व्यक्तिगत चिंताओं और भावनाओं के प्रति व्यवसाय जैसे रवैये के साथ, बल्कि कठोर और सख्त लग सकते हैं। आपकी भावनाएँ और निष्ठाएँ गहरी हैं, लेकिन आप अक्सर लोगों को यह नहीं बताते कि आप कितना ध्यान रखते हैं।

आपको आराम करना, आनंद लेना और कभी-कभी खेलना भी सीखना होगा। आप रूढ़िवादी, विश्वसनीय और महत्वाकांक्षी हैं। आपके पास योजनाओं को पूरा करने की क्षमता है। नकारात्मक पक्ष पर, आप सत्ता और सफलता की अपनी इच्छा में निर्दयी हो सकते हैं। स्वार्थ और हेरफेर संभव है। आप मान्यता चाहते हैं। भावनाएं स्थिर हैं, लेकिन काफी ठंडी हो सकती हैं।

चंद्र मंत्र	**॥ ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ॥**

मंगल

ज्योतिष के अनुसार मंगल वह ग्रह है जो साहस और तावाशाही से संबंधित है। मंगल को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है।

आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
मिथुन	**24:50:49**	**पुनर्वसु - 2**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
छटे, पहले भाव	**आठंवें भाव**	**नहीं/वृद्ध**

मंगल आपकी कुंडली मे अपरिभाषित है

मंगल आपकी कुंडली मे आठंवें भाव मे है

अनुसंधान के लिए ऊर्जा, इच्छा और उत्साह हो सकता है, चीजों के दिल तक पहुंचने के लिए, और जासूसी और रहस्यों को उजागर करने के लिए।

> “ धन के महत्व को कम करने के लिए, शायद एक साथी के माध्यम से वित्तीय समस्याएं हो सकती हैं। विवाह या उत्तराधिकार से आर्थिक लाभ हो सकता है।

किसी भी सहकारी संबंध में व्यक्तिगत संसाधनों को स्वेच्छा से साझा करने की आवश्यकता है। आपको अपनी इच्छाओं (जुनून) और अपने निम्न स्वभाव को नियंत्रित करना सीखना चाहिए। उपचार या सर्जरी में रुचि हो सकती है।

मंगल आपकी कुंडली मे मिथुन राशी मे है

मानसिक और शारीरिक रूप से आप व्यस्त हैं जैसे की छोटी मधुमक्खी। आप कई और विभिन्न गतिविधियों के साथ लगातार गति में

हैं, आमतौर पर एक समय में कई कार्यों में। व्यस्त रेहना आप ज्यादा अच्छा मानते है बजाये आलस करने के, आपको बोरियत से नफरत है। आपका दिमाग सतर्क, सक्रिय और लगातार अधिक जानने की कोशिश कर रहा है। आप एक स्पंज की तरह ज्ञान को अवशोषित करते हैं और आप किसी से भी बहस करेंगे जो मानसिक रूप से झगड़ा करना चाहता है। इस पोजीशन से बहुत अधिक बेचैनी या चिंता हो सकती है और यह महत्वपूर्ण है कि आप तनाव को दूर करने के लिए नियमित व्यायाम करें।

> "आपके हाथों और उभयलिंगी को देख के बताया जा सकता है की आप यांत्रिक क्षमता रखते हैं। अभिनय करने से पहले सोचने और धैर्य रखने की जरूरत है ताकि आप खुद को परेशानी से बचा सकें। कभी-कभी आप कुछ करने के लिए कुछ करते हैं और यह हमेशा एक अच्छा विचार नहीं होता है। छलांग मारने से पहले देखो।

यात्रा आपको आकर्षित करती है क्योंकि आप कभी नहीं जानते कि आप क्या सीख सकते हैं या आप किससे मिल सकते हैं। जल्दबाजी के कारण शायद कंधे या हाथ में जलन या दुर्घटना हो सकती है। आप कम समय में बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं, लेकिन जिन परियोजनाओं के लिए दीर्घकालिक प्रतिबद्धता, सहनशक्ति और स्थिर, लगातार प्रयास की आवश्यकता होती है, वे आपके लिए आसान नहीं होते हैं। आप अक्सर अपनी ऊर्जा को एक साथ कई दिशाओं और गतिविधियों में बिखेर देते हैं कि आप उनमें से कुछ को पूरा नहीं कर सकते हैं या उनका पालन नहीं कर सकते हैं।

आपको विविधता, परिवर्तन और मानसिक चुनौतियों की आवश्यकता है। आपका दिमाग तेज है और आप मानसिक चुनौतियों, खेलों या प्रतियोगिताओं का आनंद लेते हैं। किसी और के साथ मैचिंग विट वास्तव में आप में प्रतियोगी को बाहर लाता है। आपकी ड्राइव और ऊर्जा शारीरिक से अधिक मानसिक है। आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी बुद्धि, बुद्धि, संचार कौशल, सामाजिक परिष्कार और जागरूकता का उपयोग करते हैं। व्यंग्य और हास्य आपके लिए आसान हो जाता है। आपको यह सीखने की ज़रूरत है कि ऊर्जा का संरक्षण कैसे किया जाए ताकि आप थके नहीं और एकाग्रता न हो ताकि आप परियोजनाओं को पूरा कर सकें और वादों को पूरा कर सकें।

मंगल मंत्र	**॥ ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ॥**

बुध

बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह वाणी और तर्क से जुड़ा है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है।

आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
कन्या	22:15:41	हस्त - 4
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
आठंवें, ग्यारहवें भाव	ग्यारहवें भाव	नहीं/कुमार

बुध आपकी कुंडली मे अशुभ है

बुध आपकी कुंडली मे ग्यारहवें भाव मे है

आपके पास एक मूल, व्यापक, अनुकूलनीय और बौद्धिक दिमाग है। आपके लक्ष्य आपके दिमाग के उपयोग से प्राप्त होते हैं।

> आप ऐसे दोस्त चुनते हैं जो आपके दिमाग को उत्तेजित करते हैं, शायद छोटे दोस्त।

आप उन मित्रों के साथ बातचीत करने के लिए उत्तेजक पाते हैं जो विरोधी विचार साझा करते हैं। आप अपने पसंदीदा समूह या संगठन के प्रवक्ता या सचिव हो सकते हैं।

बुध आपकी कुंडली मे कन्या राशी मे है

आप एक स्पष्ट, तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच वाले व्यक्ति है जो एक सटीक पूर्णतावादी हैं। किसी काम को लेकर विस्तार से और कुशल संगठन पर सावधानीपूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता है। आप चीजों को अच्छी तरह से समझे हुए, व्यावहारिक और सामान्य ज्ञान रखते है। आप कुछ व्यावहारिक क्षेत्र में विशेष कौशल और तकनीकी विशेषज्ञता विकसित करते हैं। ज्ञान, विचार और

सिद्धांत वास्तव में आपकी रुचि नहीं रखते हैं जब तक कि वे व्यावहारिक, मूर्त रूप में उपयोगी न हों।

> "आप हर चीज परखना, समझना और विच्छेद करना पसंद करते हैं, लेकिन शायद आप संकेतों, बारीकियों और भावना और अर्थ के सूक्ष्म रंगों से चूक गए। आपकी ताकत आपकी सटीक सोच, सावधान शिल्प कौशल और तकनीकी कौशल की महारत में है। आप जो करते हैं उसमें आप सर्वोत्तम रहते है और यदि कोई आपके सोचे गए काम पर खड़ा नहीं उतरता है तो आप उनकी आलोचना करते हैं।

आप व्यवस्थित, अनुकूलनीय, स्थिर, जटिल और विवरण के साथ अच्छे हैं, हालांकि आपके पास निराशावादी, व्यंग्यात्मक, असहिष्णु, शिकायत करने वाले, कर्कश, आलोचनात्मक होने की प्रवृत्ति हो सकती है, या विवरणों में खो जाने और पेड़ों के लिए जंगल खो देने की प्रवृत्ति हो सकती है।

बुध मंत्र	**॥ ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥**

https://divinemessenger.in/

गुरु

बृहस्पति को धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, वैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा-दादी और शाही सम्मान का कारक कहा जाता है। यह जातक की धार्मिक धारणा, भक्ति और आस्था को दर्शाता है।

आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
तुला	18:21:57	स्वाति - 4
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
दूसरे, पाँचवें भाव	बारहवें भाव	नहीं/युवा

बृहस्पति आपकी कुंडली मे अपरिभाषित है

बृहस्पति आपकी कुंडली मे बारहवें भाव मे है

आप परोपकारी होते हैं और भविष्य में आपका बहुत विश्वास होता है। आप पर नजर रखने और किसी भी उलटफेर के माध्यम से आपकी सहायता करने के लिए आपके पास एक "स्वर्गदूत" हो सकता है।

> "मानवता के प्रति प्रेम है और दूसरों की मदद करने की एक बड़ी इच्छा है, खासकर उन लोगों के लिए जो अपनी रक्षा नहीं कर सकते। अस्पताल या जेल में काम संभव है।

मध्य जीवन में सफलता शांत, निश्छल तरीके से मिलती है। हालाँकि, आप अवास्तविक हो सकते हैं। सभी विचारों को अमल में लाने से पहले उन पर ध्यान से विचार करना महत्वपूर्ण है।

बृहस्पति आपकी कुंडली मे तुला राशी मे है

आप दार्शनिक, सहानुभूतिपूर्ण और मिलनसार हैं। आप अपने लक्ष्य के प्रति उत्साहित रहते हैं और आप अपनी सोच के दूसरों को

अधिक से अधिक प्रयासों के लिए प्रोत्साहित करने की क्षमता रखते हैं।

> “ सुंदर चीजों के लिए प्यार है और शायद कलात्मक चीजों में रुचि बढ़ेगी।

नकारात्मक पक्ष पर, आत्मग्लानि या अपव्यय का खतरा हो सकता है, और सच्चे प्यार पर आधारित साझेदारी स्थापित करने के बजाय विवाह के माध्यम से सामाजिक स्थिति में सुधार करने में ज्यादा झुकाव रहेगा। दुनिया को यह दिखाने के लिए आपका विवाह सुखी और सम्पन्न है ये जताना आपके थोड़ा मुश्किल हो सकता है क्योंकि शायद विवाह साथी के असाधारण खर्चों के कारण।

बृहस्पति मंत्र	**।। ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ।।**

शुक्र

शुक्र को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का कारक (कारक) माना जाता है। यह जुनून, शादी, विलासिता के सामान, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।

आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
तुला	12:13:11	स्वाति - 2
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
सातवें, बारहवें भाव	बारहवें भाव	नहीं/कुमार

शुक्र आपकी कुंडली मे बधक है

शुक्र आपकी कुंडली मे बारहवें भाव मे है

एकांत का आपका प्यार और आपकी खुद की सबसे अच्छी कंपनी होने के कारण आप समाज से पीछे हटना चाहते हैं। गुप्त रूप से या पर्दे के पीछे सुख का आनंद लिया जाता है। गुप्त संबंध संभव हैं।

> “ शराब, नशीली दवाओं या सेक्स के माध्यम से आत्म-भोग आत्म-नाश ला सकता है। करुणा की प्रबल भावना और दूसरों की मदद करने और सेवा करने की इच्छा है।

आप एक अच्छी सिसकने वाली कहानी के लिए चूसने वाले हो सकते हैं। सामाजिक मानकों के अनुसार सफलता आपके लिए महत्वहीन है।

आप जीवन के अर्थ की समझ चाहते हैं। विपरीत लिंग के साथ संबंधों को गुप्त रखने की प्रवृत्ति होती है। आप शायद ही कभी अपनी अंतरतम भावनाओं को प्रकट करते हैं। यह स्थिति आमतौर पर मानसिक या गुप्त विषयों में रुचि देती है।

शुक्र आपकी कुंडली मे तुला राशी मे है

आप आकर्षक, चतुर, विनम्र, विचारशील, संतुलित और सामंजस्यपूर्ण स्वभाव के हैं, और आपको दूसरों को खुश करने की तीव्र इच्छा है। क्योंकि आप हर चीज में सहमत होने की कोशिश करते हैं, किसी भी को आपको "नहीं" कहने में मुश्किल होती है। ऐसे में लोग आपका फायदा उठा सकते हैं। यद्यपि शुक्र एक तथाकथित लाभकारी ग्रह है, तुला राशि में शुक्र कई बार रिश्तों में काफी क्रूर हो सकता है। इस स्थिति में, आप जान सकते है कि दूसरों को क्या सुनना पसंद है और इस दौरान आप काफी जोड़-तोड़ कर सकता है।

> "आप स्वाभाविक रूप से लोगों और चीजों को अपने जीवन में शामिल करते हैं जब आपको उनकी आवश्यकता होती है। कभी-कभी यह इतनी आसानी से हो जाता है कि आपके पास जो है उसकी सराहना नहीं करते हैं। सद्भाव को इतना महत्व दिया जाता है कि इसे बनाए रखने के लिए आप बहुत समझौता करेंगे।

आप विवादास्पद या भावनात्मक रूप से कठिन विषयों पर ध्यान देना पसंद नहीं करते हैं और अक्सर "चीजों को सुचारू करने" के लिए आसान तरीके अपनाते है। शादी और पार्टनरशिप के मामले में आप किसी ऐसे व्यक्ति को चाहते हैं जो। एक समान हो, कोई ऐसा व्यक्ति जो आपको और आपके व्यक्तित्व को संतुलित करे सके। आप ऐसे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं जिनके पास एक निश्चित उपाय की श्रृंखला हो। आप अच्छे शिष्टाचार और परिष्कार की सराहना करते हैं और मोटे, कुंद प्रकार के व्यक्ति से खुश नहीं होते हैं।

आपके पास चुंबकत्व और परिष्कार है और आप दूसरों से अच्छा संबंध रखते हैं। आपके पास शायद संगीत या कलात्मक क्षमता है या नहीं तो कम से कम उनकी अच्छी प्रशंसा है, साथ ही साथ अच्छी रंग भावना भी है। नकारात्मक पक्ष पर, आप कभी-कभी कोई फैसला नहीं लेना चाहते हैं, हर मुश्किल में आसान रास्ता निकालना चाहते हैं। आप कुछ चीजों में अशोभनीय भी हो सकते हैं। आपको अपने करीबियों की आवश्यकता है और आपकी अपनी कंपनी में सहज महसूस करना मुश्किल हो सकता है।

शुक्र मंत्र	**॥ ॐ हीं श्रीं शुक्राय नमः ॥**

शनि

शनि धीमी गति से चलने वाला ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को गुरु भी माना जाता है।

आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
कुंभ	14:12:12	शतभिषा - 3
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
तीसरे, चौथे भाव	चौथे भाव	नहीं/युवा

शनि आपकी कुंडली मे सम है

शनि आपकी कुंडली मे चौथे भाव मे है

आप शायद रूढ़िवादी हैं और शायद भूमि या अचल संपत्ति या पुराने, पारंपरिक तरीकों, विश्वासों, चीजों या प्राचीन वस्तुओं में सुरक्षा पाते हैं। अज्ञात के अचेतन भय के कारण आप परिवर्तन को नापसंद कर सकते हैं। सुरक्षा कारणों से आपको संपत्ति संचय करने की इच्छा हो सकती है।

> आपके घर या पारिवारिक जीवन में कई जिम्मेदारियां और समस्याएं हो सकती हैं। आप अपने घर में या अपने परिवार के साथ कुछ हद तक अत्याचारी या सख्त अनुशासक हो सकते हैं।

आंतरिक चिंता अल्सर का कारण बन सकती है। आप किसी के या अपने माता-पिता की देखभाल करने वाले हो सकते हैं, शायद उनके लिए एक कर्म ऋण के कारण। जीवन का बाद का हिस्सा अधिक फायदेमंद हो सकता है यदि आप वह सबक सीखते हैं जो जीवन आपको अपने पहले के वर्षों में सिखाता है। यदि नहीं, तो बुढ़ापा उतना सुखद नहीं हो सकता।

शनि आपकी कुंडली मे कुंभ राशी मे है

आपके पास वास्तविक सामान्य ज्ञान, आत्म-अनुशासन और शक्ति के आंतरिक स्रोत हैं जो सहनशक्ति प्रदान करते हैं। यद्यपि एक मिलनसार और सहानुभूतिपूर्ण स्वभाव के साथ प्रकृति में आपको अन्य लोगों के लक्ष्यों को समझने में कठिनाई हो सकती है। आपको अन्य लोगों के लिए सहिष्णुता सीखने की जरूरत है और आपको क्षमा करना सीखना होगा।

> "आपके पास असामान्य और गैर-पारंपरिक तरीकों से प्रणाली, संगठन, अनुशासन और चातुर्य का अभ्यास करने की क्षमता है। आप आगे की सोच सकते हैं और एक आविष्कारशील स्वभाव के साथ चीजों की योजना बना सकते हैं। चीजों को बिल्कुल नए तरीके से देखना आपकी एक खूबी है।

आपकी प्रवृत्ति गंभीर, अवैयक्तिक, वैराग्य और वैज्ञानिक होने की है। नकारात्मक पक्ष पर, यदि आपकी योजनाओं का विरोध किया जाता है, तो आप काफी उत्तेजित होने की प्रवृत्ति के साथ, प्रतिशोधी, ठंडे और लापरवाह हो सकते हैं।

शनि मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ॥**

राहु

अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सेंडैंटलिज़्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
तुला	23:41:06	विशाखा - 2
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
कोई नहीं	बारहवें भाव	नहीं/वृद्ध

राहु आपकी कुंडली मे बारहवें भाव मे है

वैदिक ज्योतिष में राहु की यह स्थिति ज्यादा सकारात्मक नहीं मानी जाती है। जब राहु बारहवें भाव में होता है, तो यह जेल की सजा या अस्पताल में भर्ती होने की संभावना बनाता है। कुछ मामलों में जहां यह लाभकारी प्रभाव देता है, वही इसके विपरीत ये अस्पताल या जेल जैसी जगहों पर जाने की प्रवृत्ति भी उत्पन्न करता है। यह एक बिना दावा या मुकदमेबाजी में लाभ हो सकता है।

> राहु की यह स्थिति विदेश यात्रा का एक मजबूत संकेतक है; हालांकि, बहुत कुछ अन्य ग्रहों की चाल और स्थिति पर निर्भर करता है।

बारहवें भाव में राहु अर्थार्थ यह खर्चों में वृद्धि को बढ़ावा देता है और अक्सर यह खर्च व्यर्थ की चीजों में ही होता हैं। जातक केवल आराम और दूर के देशों और विदेशियों के साथ गुप्त संबंध या जुड़ाव में भी व्यस्त रेह सकता है। गुप्त गतिविधियों में भी शामिल होना संभव है। व्यक्ति आमतौर पर ध्यान, एकांत, कल्पना, रचनात्मकता, गोपनीयता और लंबी दूरी की यात्रा के माध्यम से उन्नति की विश्वास रखता है। उनकी कल्पना काफी जीवंत और भावुक है। यह कल्पना ही है जो उनके व्यक्तित्व को एक नया मार्ग दिखती है।

राहु आपकी कुंडली मे तुला राशी मे है

राहु हेरफेर, चातुर्य, गोपनीयता और भ्रम का स्वामी है। तुला एक चिन्ह है जो संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है। तुला राशि पर शुक्र का शासन होता है, जो राहु के साथ औसत संबंध स्थापित करता है। शुक्र और राहु दोनों ही हवादार ग्रह हैं। इनकी यह मित्रता राशि में होने के कारण राहु यहाँ संतुलन की इच्छा को अधिक बढ़ाता है। राहु जातक के जीवन में संतुलन बनाने के साथ-साथ जोड़-तोड़ में कुशल बनाता है।

> "तुला राशि में राहु जातक को परिवार के बड़ों से दूर करता है।

ऐसा व्यक्ति विशेष रूप से रिश्तों के मामलों में जीवन में समस्याओं का अनुभव करता है। राहु की इस स्थिति से जातक को भूमि और संपत्ति का नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। तुला राशि में राहु व्यक्ति को व्यवहार में कुशल बनाता है, लेकिन यह प्रेम और वैवाहिक जीवन के लिए उत्तम साबित नहीं होगा है। ऐसा व्यक्ति प्यार में हावी और विनाशकारी हो सकता है। इनके रिश्तों में भरोसे और निष्ठा की कमी बनी रह सकती है। ऐसे लोग अपने प्रेम जीवन में असंतोष की भावना परेशान रहते हैं।

राहु मंत्र	॥ ॐ ऐ हरि राहवे नमः ॥

केतु

केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह अध्यापनशीलता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।

आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
मेष	**23:41:06**	**भरणी - 4**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
कोई नहीं	**छटे भाव**	**नहीं/वृद्ध**

केतु आपकी कुंडली मे छटे भाव मे है

वैदिक ज्योतिष में केतु को छठे भाव को अनुकूल नहीं माना गया है। यह जातक को चोटों और दुर्घटनाओं के प्रति आकर्षित करता है। इससे पेरिनियल रोग जैसे फिस्टुला, पाइल्स और फिशर भी हो होने की सम्भावना हैं। केतु की यह स्थिति जीवन में बहुत सारी कठिनाइयां और परेशानियों का कारण बनती है।

> फिर भी, जातक चुनौतियों से ऊपर उठकर अपने प्रयासों और कड़ी मेहनत से सफलता प्राप्त करने में सक्षम होता है।

छठे भाव में केतु जातक के मन में सरकार का भय पैदा करता है। इसके अलावा, यदि यह इस स्थिति में बुरी तरह से पीड़ित है, तो व्यक्ति हिंसक व्यहार भी धारण कर सकता है। ऐसा जातक आपराधिक और गुप्त व्यवहार में भी शामिल हो सकता है। यह केतु के मातृ संबंधी के लिए भी प्रतिकूल स्थान है क्योंकि यह उनके लिए शांति और सुख की कमी का कारण बनता है।

केतु आपकी कुंडली मे मेष राशी मे है

मेष राशि मंगल द्वारा शासित है, जो वैदिक ज्योतिष सिद्धांतों के अनुसार केतु के साथ एक अच्छा संबंध माना जाता है। केतु को

असल में मंगल जैसा फल देने वाला कहा गया है। केतु ड्रैगन की पूंछ है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार इसे नेतृत्वहीन माना गया है। मेष राशि में केतु के साथ जन्म लेने वाले लोग अपने कार्यों पर ध्यान नहीं देते हैं अपनी वाणी पर नियंत्रण नहीं रखते है। मेष एक उग्र मर्दाना ग्रह द्वारा शासित है जो की अग्नि तत्व है। ऐसे में केतु जातक में नासमझी जोड़ता है इसलिए व्यक्ति अक्सर बिना सोचे समझे और कोई फैसला लिए कुछ भी बोलते है।

> “ मेष राशि में केतु के साथ जन्म लेने वाले जातक आमतौर पर हंसमुख, बातूनी किसम के होते हैं और ऐसे लोगों को कई भाषाएँ आती हैं। हालांकि, वे कई बार मूडी हो सकते हैं।

उनका स्वभाव अप्रत्याशित और अस्थिर होता है। ऐसे लोग अपने कामों में परिवर्तन की तलाश करते है और ये बार-बार अपना स्थान बदलते है। ये जातक सादा जीवन जीने में विश्वास रखते हैं। जीवन में शांत और ठंडा रहने की सख्त जरूरत है। हमेशा चीजों को पूरा करने के लिए आसान और सरल रास्ते अपनाते हैं। ये लोग हमेशा प्रकाशित रहना पसंद नहीं करते। वे पर्दे के पीछे रहकर काम करना पसंद करते हैं। वे जो कुछ भी करते हैं उसे पूरा करने में बहुत प्रयास करते हैं। हालाँकि वे अपने रिश्तों में संदिग्ध और आशंकित भी रह सकते हैं।

केतु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ऐं कं केतवे नमः॥**

DIVINE MESSENGER

THE SOURCE OF LIFE

Divine Messenger (Formerly known as Destiny Guide) was established by A V Shastri, CMD. It was started with an approach of astrological ventures in the Internet world and endowed technology- expedition solutions to clients all over the world.

Divine Messenger

info@apireports.com

https://divinemessenger.in/

+91-9205722942